राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत: अखिल भारतीय तथा विशेषत: राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, पूना; गुजरात साहित्य-सभा, अहमदाबाद;
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-संस्थान, होशियारपुर; निवृत्त सम्मान्य नियामक–
(आनरेरि डायरेक्टर), भारतीय विद्याभवन, बम्बई।

ग्रन्थाङ्क ५८

राजस्थानी-हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

सम्पादक
श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया
एम. ए., साहित्यरत्न,
राजस्थानी शोध सहायक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

प्रकाशनकर्त्ता
राजस्थान राज्याज्ञानुसार
सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१८
प्रथमावृत्ति ५००
भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८३
खिस्ताब्द १९६१
मूल्य २.७५

मुद्रक—हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर.

RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular

*

GENERAL EDITOR

PADMASHREE JIN VIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Member of the German Oriental Society, Germany; Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona; Vishveshvarananda Vaidic Research Institute, Hosiyarpur, Punjab; Gujrat Sahitya Sabha, Ahemdabad; Retired Honorary Director, Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay; General Editor, Gujrat Puratattva Mandira Granthavali; Bharatiya Vidya Series; Sinhghi Jain Series etc. etc.

* *

NO. 58

Catalogue of Rajasthani Manuscripts

Part-Second

* * *

Published

Under the Orders of the Government of Rajasthan

By

The Director, Rajasthan Prachyavidya Pratishthana

(Rajasthan Oriental Research Institute)

JODHPUR (RAJASTHAN)

V. S. 2018] [*1961 A. D.*

CATALOGUE OF RAJASTHANI MANUSCRIPTS

Part Second

*

Edited with introduction and appendixes by

SHRI PURUSHOTTAM LAL MENARIA,
M.A., Sahityaratna,
Rajasthani Research Assistant
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur.

*

Published under the orders of the Government of Rajasthan

By

THE RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE
JODHPUR (Rajasthan)

V.S. 2018] [1961 A.D.

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर

(Rajasthan Oriental Research Institute)

JODHPUR.

उद्देश्य

१. राजस्थान में और अन्यत्र भारतीय संस्कृति के आधारभूत संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी व अन्य भाषाओं में लिखित प्राचीन ग्रंथों की खोज करना तथा उन्हें प्रकाश में लाना।

२. प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह कर उनके संरक्षण की व्यवस्था करना और उपयोगी ग्रन्थों को सम्बन्धित विद्वानों से सम्पादित करा कर उनके प्रकाशन की व्यवस्था करना।

३. साधारणतः भारतीय एवं मुख्यतः संस्कृत व प्राचीन राजस्थानी के अध्ययन, अन्वेषण, संशोधन हेतु अत्यावश्यक उत्तम प्रकार का सन्दर्भ पुस्तक भंडार (मुद्रित ग्रन्थालय) स्थापित करना और उसमें देश-विदेश में मुद्रित विविध विषयक अलभ्य-दुर्लभ्य सभी ग्रन्थों का यथासंभव संग्रह करना।

४. संगृहीत सामग्री से शोधकर्त्ता अध्येता विद्वानों को उनके अध्ययन और अनुसंधान में सहायता पहुँचाना।

५. राजस्थान के लोक-जीवन पर प्रकाश डालने वाले विविध विषयक लोक-गीत, सांप्रदायिक भजन, पदादिक भक्ति साहित्य एवं सामाजिक संस्कार, धार्मिक व्यवहार तथा लौकिक आचार-विचार आदि से सम्बन्धित सभी प्रकार की सामग्री की शोध, संग्रह, संरक्षण, एवं प्रकाशन करने की व्यवस्था करना।

सञ्चालकीय वक्तव्य

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के केन्द्रीय पुस्तकालय, जोधपुर में वर्ष १९६०-६१ तक १५,६२५ हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह किया जा चुका है। इनमें से वर्ष १९५७-५८ तक प्राप्त ग्रन्थों की सूची "राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग १" प्रकाशित की जा चुकी है। अब वर्ष १९५८-५९ में प्राप्त ७७४ राजस्थानी ग्रन्थों का विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ-सूची के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

इस सूची का सम्पादन हमारे प्रतिष्ठान के शोध सहायक श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम. ए., साहित्यरत्न ने योग्यतापूर्वक किया है। श्री मेनारिया ने परिश्रमपूर्वक ग्रन्थ-सम्बन्धी विशेष ज्ञातव्य प्रस्तुत किये हैं और परिशिष्ट के अन्तर्गत कतिपय ग्रन्थों के आदि-अन्त देने के अतिरिक्त ग्रन्थकार नामानुक्रमणिका तैयार की है। सन्तोष का विषय है कि सूचीपत्र के निर्माण में निर्धारित रीति-नीति का तत्परता-पूर्वक पालन किया गया है।

प्रस्तुत सूची-पत्र के प्रकाशन-व्यय का आधा भाग केन्द्रीय सरकार के वैज्ञानिक और सांस्कृतिक मन्त्रालय ने प्रान्तीय भाषा-विकास योजना के अन्तर्गत प्रदान किया है, तदर्थ हम आभारी हैं।

भारतीय स्वाधीनता दिवस
१५ अगस्त, १९६१ ई०

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक,
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर।

विषय-तालिका



संकेत-तालिका

१. रचना-काल — र.का.
२. लिपि-काल — लि.का.
३. लिपिकर्त्ता — लि.क.
४. रचना स्थान — र.स्था.
५. लिपि-स्थान — लि.स्था.
६. ग्रन्थाङ्कसे तात्पर्य प्रतिष्ठानकी ग्रन्थ-प्राप्ति पञ्जिकाकी संख्या (Accession Number) से है।
७. ग्रन्थाङ्कके साथ कोष्ठकमें दी गई संख्या सम्बद्ध ग्रन्थकी कृति-संख्या है।
८. लिपिसमय और रचनाकालके निर्देशन हेतु ग्रन्थोंके अनुसार सर्वत्र विक्रमी संवत् प्रयुक्त हुआ है।
९. पुष्पाङ्कित "*" ग्रन्थका विशेष परिचय परिशिष्ट संख्या १ में प्रस्तुत किया गया है।

सम्पादकीय प्रस्तावना

राजस्थान और इससे संबद्ध प्रदेशों के भूतपूर्व राजाओं, जागीरदारों, विद्वज्जनों, साहूकारों, मन्दिरों, मठों, उपाश्रयों तथा राजकीय सार्वजनिक संस्थानों के अधिकार में राजस्थानी भाषा में लिखित प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ प्रचुर संख्या में उपलब्ध होते हैं। भारतीय साहित्य, इतिहास, राजनीति और दर्शनादि विषयों के अध्ययन को पूर्ण करने में इन ग्रंथों का विशेष उपयोग और महत्त्व माना गया है, इसलिये अनेक विदेशीय संग्रहालयों और पुस्तकालयों में भी राजस्थानी भाषा में लिखित प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह एवं संरक्षण विशेष प्रयत्न से किया गया है। विद्वज्जगत की जानकारी और अध्ययन के लिये ज्ञात समस्त राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथों के सूचीपत्रों का प्रकाशित होना नितान्त आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण कार्य है, तदनुसार रा० प्रा० वि० प्रतिष्ठान के केन्द्रीय पुस्तकालय, जोधपुर में संगृहीत २१६६ ग्रंथों का परिचय "राजस्थानी हस्तलिखित ग्रथ-सूची, भाग १" के रूप में गत वर्ष प्रकाशित हो चुका है। इसी क्रम में "राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथ-सूची, भाग २" में ७७४ ग्रंथों का परिचय प्रस्तुत है।

प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के सूचो-पत्र मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं—

१ सूचनात्मक, और
२ विवरणात्मक।

प्रस्तुत ग्रंथ-सूची सूचनात्मक है, जिसमें ग्रंथ-सम्बन्धी कर्ता, लिपि-समय, पत्र-संख्या, रचना-काल, लेखन-स्थान, लिपिकर्ता आदि के विषय में अत्यन्त संक्षेप में सूचनाएँ दी गई हैं। स्पष्ट है कि "विवरणात्मक" सूची की पूर्ति "सूचनात्मक" से नहीं की जा सकती। सर्व प्रथम ज्ञात संपूर्ण प्राचीन राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थों के परिचयात्मक सूचीपत्रों का प्रकाशन विशेष आवश्यक है और इसी दृष्टि से प्रस्तुत ग्रन्थ-सूची तैयार की गई है।

इस ग्रंथ-सूची में सङ्कलित कृतियों में कबीर सम्बन्धी रचनाओं (क्रमाङ्क ६७ से ७६), कृष्ण-रुक्मिणीरी वेली, सचित्र (क्रमाङ्क १८१), द्रौपदी चउपई (क्रमाङ्क २५०), नागराज पिंगल (क्रमाङ्क ३२९), पञ्चसहेलीरा दूहा (क्रमाङ्क ३६२), पन्दरमी विद्यारी वार्ता, सचित्र (क्रमाङ्क ३७९), पृथ्वीराज पवाड़ा (क्रमाङ्क ४१३), रसरतनागर (क्रमाङ्क ५१६), राधावल्लभ ख्याल,

ख्यालायत (क्रमाङ्क ५३३), रावत प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ हरिसिंघोतरी वात (क्रमाङ्क ५५३), मुंहणोत जोगीदास कृत शत्रुभेद (क्रमाङ्क ६३६) और महेश कवि कृत हमीर रासो (क्रमाङ्क ७६४) विशेष उल्लेखनीय हैं। कतिपय महत्त्व-पूर्ण ग्रंथों के आदि-अन्त भी सूची के अन्त में परिशिष्ट सं० १ के रूप में दिये गये हैं। समस्त ग्रंथों के परिचय वर्णक्रमानुसार लिखे गये हैं और पाठकों की सुविधा हेतु परिशिष्ट सं० २ में कर्तानामानुक्रमणिका भी प्रस्तुत की गई है।

प्रस्तुत सूची मे १६ वीं सदी से २० वीं सदी विक्रमी तक रचित एवं लिखित कृतियों का संकलन किया गया है। उदाहरणार्थ प्राचीनतम रचित कृति छीहल कवि कृत "पञ्चसहेलीरा दूहा" (क्रमाङ्क ३६२) वि० स० १५७५ की है और प्राचीनतम लिखित प्रति रतनचरित्र कृत "सम्यकत्व-कौमुदी" (क्रमाङ्क ६६३) वि० स० १६०६ की है। सूची की अधिकांश कृतियां १८ वीं और १६ वीं सदी विक्रमी में रचित और लिखित हैं। सूची से प्रकट है कि ग्रंथ-रचना और लेखन का कार्य मुख्यत: राजस्थान, मालवा और गुजरात के विभिन्न स्थानों में हुआ है, क्योंकि सम्बद्ध काल के प्रमुख भारतीय विद्या-केन्द्र इसी क्षेत्र में विद्य-मान थे। प्रस्तुत सूची से यह भी स्पष्ट होता है कि ग्रंथों की रचना और लेखन सम्बन्धी कार्यों में पुरुषों के साथ-साथ अनेक विदुषी महिलाएँ भी सक्रिय भाग लेती थीं।

सूची के ग्रंथ-परिचय-पत्र श्रीयुत् नाथूलालजी त्रिवेदी, साहित्याचार्य के सहयोग से तैयार किये गये हैं। श्रीयुत् अगरचन्दजी नाहटा ने सूची को देख कर आवश्यक संशोधन करने की कृपा की है। सूची का निर्माण परम श्रद्धेय पद्मश्री मुनि जिनविजयजी और श्रीयुत् गोपालनारायणजी बहुरा के निर्देशन में किया गया है। तदर्थ मैं उक्त सभी महानुभावों के प्रति आभारी हूँ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर
श्री गणेश चतुर्थी, सं० २०१८ वि०

पुरुषोत्तमलाल मेनारिया,
एम. ए., साहित्यरत्न
सम्पादक

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६६०२	अंजनारास		१८२७	१२	लि. क.–गुमानी। लि. स्था.–पाली।
२	१००५२ (२३)	अंजनासतीनोरास		१८९७	१–३०	
३	८२६८	अंजनासतीरास		१७वीं	१२	
४	८५३९	अंजनासुन्दरी चउपई		१७६६	१७	लि. क.–सिद्धिविलासगणि, मरोट्ट (मारोठ ?)
५	९८५३	अंजनासुन्दरीरास		१८७३	१७	प्रथय पत्र अप्राप्त। लि. क.–अजबसुन्दर। लि. स्था.–मेदिनी तट।
६	९८६१(७)	अंतरीकजीरो स्तवन		२०वीं	३१वां	
७	१०१८० (३२)	अंतरीकपार्श्वनाथस्तवन		१९वीं	७७–७९	
८	१००५१ (२१)	अंतरीकरो स्तवन		१८८५	१४९–१५०	
९	१०१८० (४२)	अंतरीकस्तवन		,,	११९–१२५	
१०	१०२४८ (११)	अइमत्तरिषिसज्झाय		१८१२	६७, ६८	
११	८७२०	अगडदत्तरास	श्रीसुन्दरवाचक	१६८१	२०	
१२	८८४२	,,	हरचंद	१६९२	१६	
१३	८४००(३४)	अजितशांतिस्तव	पाश[र्व]चंद	१९वीं	७८–८०	
१४	७९६४	अठार भार वनस्पतिनो परिमाण		१९२३	३०	लि. क.–हरषचन्द्र, रामपुरा (कोटा)।

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	८१२४	अढ़ीदीपविचार		१९वीं	६	
१६	१०१८० (२७)	अतीत–अनागत–वर्तमान चौवीसी-स्तवन		,,	६८वां	
१७	१०६७७	अद्वैताद्भुतनाटक	दरजी देवकृष्ण	१९३५	४०	लि. क.–साहु हीरादास ।
१८	८५२७	अध्यात्मसारप्रश्नोत्तर	मुनि कुंवरविजय	१८८५	२२७	लि. क.–ऋषि हुकमचंदजी, पाली मध्ये ।
१९	८४२२(३२)	अनाथीधनरिषिदसाण	हीरानन्द सूरि	१८वीं	९८–१०५	
२०	१०१८०(३)	अनाथी सिझा		१९वीं	२२वां	
२१	८४४७	अमरसेन-वयरसेन-प्रबन्ध		१८वीं	२०	अपूर्ण
२२	८१०८	अयवंती-गजसुकुमाल-रास	जिनहरष	१९वीं	६	र. का. १७४१
२३	८१३४	अयवंती-सुकुमाल-चरित्र	,	१८वीं	५	,, ,,
२४	९१५२(५)	अयवंती-सुकुमाल चौढ़ालियो		१९०५	६९–७०	
२५	९८६१(९)	अरजिनस्तवन		२०वीं	३४वां	
२६	९७८०	अलोवणा		१८वीं	६	
२७	८४२८(४)	अष्टप्रकारी पूजा		२०वीं	१९–६१	
२८	९८६१(१८)	,, ,,		,,	८३–९६	
२९	९८६१(१२)	अष्टमीनु स्तवन		,,	४१–४४	
३०	८८३०	अष्टापदमहातीर्थस्तवन	समरो	१७६०	५	लि. क.–तिलकरुचिमुनि । लि. स्था.–पट्टणानगर।
३१	८३२७	आगमसारोद्धार	देवचंद	१८७५	५५	र.का. १७७६ । र.स्था. मारोठ । लि.क.–मानसुन्दर । लि.स्था.–बीकानेर। प्रथम पत्र अप्राप्त।

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
३२	८४२६(७)	आचार्य चैत्यवन्दन तथा आचार्य स्तवन		२०वीं	४६, ४७	
३३	६७०१	आठवीं वार्ता		१८५८	१५	लि. क. ज्ञानचंद
३४	८६०८(१)	आणंदश्रावक चौपई	श्रीसार	१८६८	१-१४	लि. क.-रूपचंद थावर्या बजार-मध्ये रतलाम नगरे ।
३५	८११६	आणंदसिद्धि[संधि]		१८वीं	११	
३६	१००५२(३)	आतमनिन्दा		१८६७	६८-१०५	
३७	६५६३	आतमबोध		२०वीं	२८	र. का. १९३० । पत्र सं. १ और २ अप्राप्त ।
३८	१०१८० (६७)	आतमभास		१९वीं	२१३-२१५	
३९	१०१८० (४६)	आतमशिष्यागीत		,,	१३५-१३८	
४०	१०१८० (२५)	आतमशिक्षासज्झाय		,,	६४वां	
४१	१०१८० (३५)	आतमसज्झाय		,,	८५-८६	अन्तिम पत्र पर गोगागीत, नेमिनाथ गीत आदि हैं ।
४२	१०१८० (३४)	आतमज्ञानसिझाय		,,	८५वां	
४३	१०१८० (४४)	आतमसझाय		,,	१३२-१३४	
४४	८४००(३१)	आदिजिनगीत	करमसिंह		७३वां	बीकानेरके किसी जैनमंदिरमें स्थित प्रतिमासम्बन्धी स्तोत्र ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
४५	८२८७	आदिनाथविवाहलो		१७४४	१३	
४६	१०१८० (५९)	आदिनाथस्तवन		१९व	१८१	
४७	७९५३	आनन्दसंधि		१८३९	९	र.का. १६१८। लि.स्था. देशणोक (बीकानेर) पत्र १, २ अप्राप्त।
४८	८१५५(अ)	आर्द्रकुमारीकथा		१९१९	१९	पत्र संख्या ९ अप्राप्त।
४९	९१८०	आरतीसंगलदीपक			१०	लि. क.–पं. गोकुलसुन्दर।
५०	९५९०	आलोयणनी विधि		१८वीं	५	प्रथम पत्र अप्राप्त।
५१	८४२९(२२)	आलोयणस्तवन		२०वीं	७३–८८	
५२	९५५२	आषाढ़भूति चौपई		१८७४	६	लि. क.–ऋषि कर्मचन्द। लि. स्था.–विक्रमपुर।
५३	१००५२(६)	आषाढभूतिजीरो पांचढालियो		१८९७	११७–१२३	
५४	१०१८९(३)	आसोरेटना दूहा		१८५०	७३–७७	
५५	९००९	इलापुत्र चौपई		१८वीं	५	
५६	९०३४	उत्तराध्ययनकथा		१७८१	९०	
५७	९७०३	उपकेशगच्छसारांश	धनसार	१६२५	६	लि. क.–वाग्देव सुन्दर। लि स्था.–राजलदेसर।
५८	८४२९(८)	उपाध्यायचैत्यवंदन		२०वीं	४७, ४८	
५९	१०१८० (७३)	ऋषभजिनस्तव		१९वीं	२२७–२२८	
६०	८४००(३६)	ऋषभदेवगीत	समरचंद्रसूरि	,,	८१वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१	८४००(१९)	ऋषभदेवजीके गीत		१९वीं	५८–६०	
६२	९७०२	ऋषभनाथको स्तवन		१९०३	३१	लि. क.–हंससुन्दर, देणोर मध्ये। खण्डित।
६३	९८६१(१०)	ऋषभस्वामीस्तवन		२०वीं	३५वां	
६४	९१२७(३)	ऐकलवाराहरी दाढालारी वात		१९वीं	३४–५०	लि. क.–नाथू व्यास
६५	८३२५	औषधिसंग्रह		१७वीं	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त। लि. क.–छत्रतिलक ! लि. स्था.–सुखेड़ा।
६६	९२९३	कक्काबत्तीसी		१८वीं	२२	
६७	८७०४(१)	कबीरके पद		१८४९	१	लि. क.–भोजजी पोकरणा, जोधपुर।
६८	९८३२	कबीरजीकी वाणी	कबीरदास	१८१६	१०६	गुटका, जिसमें सुन्दरदास कृत ज्ञानसमुद्र भी है।
६९	८५५९(२)	कबीरजीकी वाणी साखी आदि	,,	१८५५	४–९६	जीर्ण गुटका।
७०	९९५९(१)	कबीरजीकी साखी	,,	१९वीं	८	प्रथम पत्र अप्राप्त।
७१	८५०१(५)	कबीरजीको अंग	,,	१८वीं	२३४–२८१	अन्तमें साधोकी आरतीके १८ पत्र हैं।
७२	८५६१(१)	कबीरजीको कृत	,,	१९ वीं	१५–६६	
७३	९७१८	कबीरवाणी	,,	,,	३४४	
७४	९७३४	कबीरसाहबको ग्रन्थ	,,	१८४८	९६	लि. क.–मांनदास साधु।
७५	८५६२(६)	कमलकुंवर बाईरो गीत			७३–७४	
७६	८८३४	कमलावतीरास	विजयभद्र	१७वीं	३	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
७७	८६०८(४)	कयवन्ना चौपई	जयरंग	१८६८	७–९७	लि. क.–रूपचंद। लि. स्था.–रतलाम।
७८	८९७९	,, ,,	,,	१९२८	३७	लि. क.–प्यारचंद।
७९	१००५५	कयवन्नाजीरी चौपई		२०वीं	४३	
८०	८०५०	कर्मनी बात	सांमलदास	१८७४	२२	प्रथम पत्र अप्राप्त।
८१	९८१५	कर्मविपाक		१७६०	२	लि. क.–प्राणविजय।
८२	८८४३	करगडु चौपई	मतिशेखर	१७वीं	१०	
८३	१०१८९(४)	करणनु आख्यान		१८५०	७८–११३	
८४	१००५१ (१२)	करमसज्झाय		१८८५	१३३–१३४	
८५	८७४७(४)	करुणाबत्तीसी	माधोदास	१९वीं	२०–२३	
८६	१०५६०(१)	कल्पवृक्षदानरी विगत			१, २	
८	७९१६	कल्पसूत्र सटबार्थ		१७७९	११६	लि. क –लखाजी। लि. स्था.–ावा।
८८	९९७६	कल्पसूत्र टबार्थ		१८वीं	१९	
८९	९९९९	कल्पसूत्रभाषा		१८८३	१००	लि. क.–हर्षचंद।
९०	१०५१०	कल्पसूत्रभाषा		१७वीं	१२४	
९१	९७८३	कल्पसूत्रभाषावृत्ति	लक्ष्मीवल्लभ	१८१७	२५०	पत्र सं. १-५ अप्राप्त। लि. क.हंससुन्दर। लि. स्था.–बेगम बाजार, मुसाया तटे।
९२	७८९१	कल्याणमन्दिरस्तोत्र वालावबोध	कुमुदचंद्राचार्य, अपर नाम सिद्धसेनाचार्य	१६५३	६–२३	लि. क. हीरा साध्वी।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
९३	९७३२ (१)	कायापाञ्जी	कबीर	१९वीं	१–३	
९४	८६९३ (२)	किशनबावनी	किशन		३६–५२	अन्तमें पृ. १११ तक पद छप्पय आदि हैं।
९५	८५१३	कीमिया शहादतको अनुवाद	यू. मुहम्मद गजाली	१९वीं	१७६	अनु. अडाणजी सेवापंथी।
९६	७८९१ (७)	कृपालीस्तोत्र		१९१५	४०,४१	लि. क.–भज्जूराम
९७	१०६८०(२)	कृपासिंधु किसनहरीपदमाला		१९वीं	५–८	
९८	१०१८९(६)	कृष्णचरित्र		१८५०	१४६–१५७	
९९	९१४४	कृष्णरुक्मणीरी वेली	प्रथीराज	१७४७	३२	कल्पवल्ली टीका। लि. क.–मुनि महेसदास।
१००	८२५३	,, ,,	,,	१८००	४०	लि. क.–धर्मसुन्दर। लि. स्था.-मेड़ता।
१०१	९२५२ (१)	,, ,,	,,	१७७४	१–१८	भूलसे पत्र सं. १२के पश्चात् १४ लिखित है।
१०२	९४२० (१)	कृष्णरुक्मिणी वेली सचित्र			१३१	चित्र संख्या ६४.
१०३	८९३१	कोकमंजरी	आनंद	१८३२	२५	लि. क.–सवाईराम मेव।
१०४	८२०७	कोकशास्त्र	नरबद	१९७६	८६	र. का १६५६। लि. क.–हरि-विजय, बम्बई।
१०५	९०८६	कोकशास्त्रभाषा		१९वीं	४०	
१०६	९०५२ (१)	कोकसार	आनंद	१९१४	६–२३	लि.क.–नंदराम व्यास, उदयपुर।
१०७	९०५४ (४)	कोकसार		१८१०	१–२१	
१०८	९७३० (१)	कोकसार	आनंद कवि	१८२१	१–४५	लि. क.–ऋषि दयाराम।
१०९	१००५(१३)	खंदग चौढालियो		१९वीं	३१–३८	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
११०	८४२२ (१८)	खिमाछत्तीसी	समयसुन्दर	१८वीं	८०–८२	
१११	६४६३	खेत्रसमास		१७वीं	८	
११२	६४६४	ग्रहणवारफल		१८३३	१०	अपर नाम फल शनिका लिखित है। लि.क –पं. कनकविधान
११३	७६०१	ग्रहलाघवटीका		१८६३	३६	अपूर्ण
११४	६६६७	गजानन भजनावली बही		१९वीं	४७	,,
११५	८४६३	गणितसारसंग्रहभाषा	महावीराचार्य	१९२४	१२७	,,
११६	८४६४	,, ,,	,,	१९२५	१०२	भाषाकार अमीचंद
११७	१०२०६	गीताभाषा		२०वीं	१४६	अपूर्ण
११८	८५६१(२)	गीतामाहात्म्यभाषा		१७५४	६६–१०४	लि.क.-रूपदास, गरीबदासशिष्य
११९	८७७६	गीदड़रासो		१९वीं	२	
१२०	६८६१(११)	गुणमञ्जरी		२०वीं	३६–४१	
१२१	८५३५	गुणावलीरी चउपई		१८२४	१५	लि. क.–रामचद्र। लि. स्था.–सादड़ी।
१२२	८४००(६)	गुरुगीत	पद्मचंद सूरि		३७, ३८	र. क. १७७५।
१२३	१०१८० (७०)	गोडी पारसस्तवन		१९वीं	२२३वां	
१२४	१०१८० (७२)	गोडीस[स्त]व		,,	२२७वां	
१२५	८४००(४०)	गौडीजी गीत	देवीचंद	,,	८५–८७	
१२६	१०१८०(६)	गौडी पार्श्वनाथछंद		,,	२८–३०	
१२७	८४००(१५)	गौडी पार्श्वनाथस्तवन		,,	४५–५२	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२८	८१६०	गौड़ीपार्श्वनाथ	कुशललाभ	,,	६	
१२९	१०१८० (८)	गौड़ीपार्श्वनाथस्तवन		१९वीं	२८वां	
१३०	१०१८० (६०)	गौड़ीयपार्श्वनाथस्तवन		,,	१८१–१८६	
१३१	१०२४८ (९)	गौड़ीयपार्श्वनाथस्तवन		१८२२	६४–६६	
१३२	९४६०	गौतमगाथा		१८१०	१२५	पत्रसंख्या १–१३ तक अप्राप्त ।
१३३	१००५१ (७)	गौतमजीरी वीनती		१८८५	११३वां	
१३४	८४२२ (४०)	गौतमजीरो स्वाध्याय		१८वीं	१२५वां	लि.क.–रामचंद्र ।
१३५	८२४३ (२)	गौतम दीपालिकास्तवनम्		१७वीं	५	
१३६	८१५४	गौतमपृच्छा		१८वीं	६	लि. क.–मानसिंह ऋषि ।
१३७	१००५९ (१)	,, ,,		१६वीं	१–४	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
१३८	१०१८० (४१)	,, ,,		१९वीं	१११–११९	अपूर्ण ।
१३९	१०६५०	,, ,,		१८३४	९९	लि. क.–मुनि खुशालविजै, मुनि हेतविजयशिष्य । लि. स्था.–स्तंभतीर्थ ।
१४०	८१५५ बी.	गौतमपृच्छाके सौ बोल		१९वीं	११	
१४१	१०२४८ (४)	गौतमपृच्छाचौपाई		१८१२	४२–४९	
१४२	९०१९	गौतमपृच्छा बालावबोध	सुधाभूषण	१९वीं	३८	
१४३	८४२८ (६)	गौतमरास		२०वीं	६४–६६	
१४४	९६१३	,, ,,	विजयभद्रसूरि	१९वीं	१०	लि. क. प्रेमसागर ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४५	८४२२(१४)	गौतमरासो		१८वीं	६८–७२	
१४६	८४००(१)	गौतमस्वामीश्रष्टक	लावण्यसमय	१९वीं	१, २	
१४७	८४२९ (२१)	,, ,,		२०वीं	७१–७२	
१४८	६५२४ (१)	गौतमस्वामीजीरो रास		१८वीं	१–४	
१४९	६९४३	गौतमस्वामीढाल		१९वीं	२४	लि. क.–बदीचंद।
१५०	१००५ (६)	गौतमस्वामीनो रास		१८७४	२६–३३	
१५१	८४२८ (८)	गौतमस्वामीरास		२०वीं	६८–८५	
१५२	८३६७	गौतमस्वामीरो स्तवन		,,	४०	
१५३	८४९८(४)	गौरख छंद		१८वीं	२४–२७	
१५४	८४२८(२२)	गौरखपत्रो		२०वीं	३	
१५५	८०९२	चतुर्विंशतिजिनस्तव	जिनराज	१८३१	६	लि. क.–दौलतराम।
१५६	८११६	चतुर्विंशतितीर्थंकरगीत		१९वीं	४	
१५७	७९७२	,, ,,		१८७८	७	लि क.–खेमचंद।
१५८	९३३२	चतुरमुकुटकी कथा		१८८१	२३	
१५९	९११९	चतुरमुकुटकी वारता		१८८२	१०७	
१६०	८५६०(१)	चन्द्रकुंवारकी वार्त्ता		१८६८	५–१८	
१६१	९१५२(१)	चन्द्रचरित	मोहनविजय	१९००	१–४७	
१६२	८८२६	चन्द्र लेहाचौपई	मतिकुशल	१८३९	२१	लि. क.–चैनराम। लि स्था.–अजमेर।
१६३	८२६२	चन्द्ररास	मोहनविजय	१७८३	१३७	लि. क.–मोहनविजय। लि.स्था.–पाड़लिया।
१६४	९९५४	चन्द्रार्की		१७वीं	८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६५	८४२२(११)	चन्दणवालासज्झाय	अजितदेवसूरि	१८वीं	५३–५७	
१६६	८५६२(१२)	चन्दनमलयागिरिरा दूहा		१७६५	११५–१३१	
१६७	७८८०	चन्दरास	मोहनविजय	१८११	७३	लि. क.–लक्ष्मीविजय। लि. स्था.–सूरत।
१६८	१००१५	,,	,	१७७३	७०	प्रथम पांच पत्र अप्राप्त। लि. स्था.–रामपुरा, कोटा।
१६९	८४९९	चरणदासजीरो सरोधो	चरणदास	१८वीं	२८	
१७०	८४२९(१२)	चारित्र्यचैत्यवंद		२०वीं	५२–५३	
१७१	८३३४	चित्रसेनपद्मावतीचौपई	रामविजय, दयासिंहमुनिशिष्य	१९वीं	३०	र. का. १८१४।
१७२	८४२९(२७)	चैत्यवंदन		२०वीं	११० वां	
१७३	८४२९(१४)	,,		,,	५४–५८	
१७४	९६०७	चैत्यवंदनसूत्रनो बालावबोध		१८वीं	१००	अपूर्ण।
१७५	८१८२	चौबीसजिनस्तव		,,	१०	लि. क.–माणिकविजय।
१७६	९१५२(३)	चौबीसजिनस्तवन		१९००	५६–६०	
१७७	१०१८० (६३)	चौबीसतीर्थंकर पंचबोलस्तवन		१९वीं	१९७–१९९	
१७८	१००५२(८)	चौबीसतीर्थंकर स्तवन		१८९७	१३१ वां	
१७९	८४०० (४१)	चौबीसी	देवीचंदऋषि	१९ वीं	८७–८९	
१८०	९६७२	चौबीसीसूत्रार्थी	आनंदघन महाराज	,,	३६	अपूर्ण।
१८१	८५६२ (८)	चौहानपृथीराजरो छंद			७६–७९	*
१८२	८३१३	छठो भुवनद्वारवर्णन		१८७४	१६	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८३	१०६८०(३)	छत्तीस कारखानाका नाम			८–९	
१८४	१०१८० (२८)	छन्नूं जिननामस्तवन		१९वीं	६९वां	
१८५	९२५६	छहकाय आदि		१८वीं	१३	
१८६	८५५९ (१)	छीतमजीकी जखड़ी		१८५५	१–४	जीर्ण गुटका।
१८७	९२५४ (५)	जगदम्बरी नीसाणी		१९वीं	१–८	
१८८	९४९७	जगावर्धा		१८वीं	६	प्रथम पत्र अप्राप्त। लि. क.–बुधसुन्दर।
१८९	८६६९	जन्मपत्रिकागणितक्रमभाषा		१७७२	१५	लि. क.–अमृतसागरगणि। लि. स्था.–श्रीमंडपिका बन्दर।
१९०	८३३७	जन्मपत्रीनिर्माणविधि		२०वीं	८	
१९१	८५६२ (९)	जनम बत्तीसी	भगतराम पचोली	१७९५	७८–९१	र. का. १७९५। *
१९२	७९३७	जम्बूचरित्र	मनरूप	१८९९	३६	लि. क.–रंगविजय। लि. स्था.–भावगढ़। र. स्था. नाहरगढ़नगर।
१९३	८५५४	,, ,,		१८२६	२६	लि. क.–सुजाणऋषि।
१९४	८४५८	जयपुरराजाओंकी वंशावली		१९वीं	२७२	आदिके ३९ पत्र तथा पत्र सं. ५५ से ५८ अप्राप्त।
१९५	१०१८६(१)	जलालगहाणीरी वात		१८५३	१–६३	
१९६	१०६७५(३)	,, ,, ,,		१८११	५७–८२	'पोथी दाउदखांकी नकल।'

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९७	८५६२ (५)	जसोतसिंह झाला मालजीरो गीत	भीमजी आढा		७१–७२	
१९८	८२८६	जाम्बवतीचौपई	सूरसागर	१८वीं	१०	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
१९९	१०१८० (४०)	जिनगीत		१९वीं	१०९, ११०	
२००	९५०२	जिनरस		१८७५	१०	लि.क.–अखैचंदऋषि । लि.स्था.–स्यजैहनाबाद (शाहजहानाबाद) ।
२०१	९५२२ (५)	जिनराजचैत्यवंदन		१७६८	४	
२०२	९५७३	जिनरामायण		१८वीं	१३४	अपूर्ण ।
२०३	८४००(३२)	जिनस्तवन	पाशचंद	१९वीं	७३–७५	
२०४	८४२२(१७)	,, ,,		१८वीं	७९–८०	
२०५	१०२४८ (१७)	,, ,,		१८१३	१२६–१३०	
२०६	८४००(२७)	जिनस्तुति	कनककीर्ति	१९वीं	६९–७०	
२०७	१०१८० (३९)	जिनस्तुति और गौड़ीपार्श्वनाथस्तवन		,,	१०५–१०९	
२०८	९८६१ (८)	जिनस्तोत्र		२०वीं	३२–३३	
२०९	८०४६	जिनसूक्तीमाला		१८वीं	९	
२१०	१०२४८ (१२)	जिसलमेरमंडण पार्श्वनाथस्तवन		१८१२	६८–७०	
२११	८४२२	जीवकायासज्झाय		१८वीं	९७–९८	
२१२	८४०३ (२)	जीवविचारप्रकरण		२०वीं	२१–५१	सबालावबोध ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१३	६५२२ (१)	जीवविचारप्रकरण		१७६८	७	लि. क.–माणिक्यचंद्र ।
२१४	६५२२(६)	,, ,,		१८वीं	६–८	लि. क.–मुनि माणिक्यचंद्र ।
२१५	६६३८	जैनतीर्थंकरपूजापद्धति		,,	७–३८	अपूर्ण ।
२१६	८४०३(१०)	जैनतीर्थवर्णन		२०वीं	१००, १०१	
२१७	८५०८	जैनशतक		१८६५	५३	
२१८	६२५७ (४)	जैनशतम्		१८वीं	१–४	
२१९	८१७५	जैनसंस्कारविधि		,,	२३	
२२०	६६०८	जैनसंप्रदायचर्चा		,,	१०	
२२१	१००५१ (१५)	डांढणजीरो तवन		१८८५	१३८–१३९	
२२२	१०१८० (५७)	ढालरागगीतसंग्रह		१९वीं	१६३–१७८	
२२३	७८६२	ढालसागर हरिवंशप्रबन्ध	गुणसागर	,,	७१	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
२२४	७९०६	,, ,,	,,	१८४७	४०	लि. क.–शौर्यसौभाग्य । लि. स्था.–नारायणगढ़ ।
२२५	७९१४	,, ,,	,,	१९वीं	३६	
२२६	७९२१	,, ,,	,,	१७९६	१३०	लि. क.–कुशललाभ ।
२२७	८२९६	ढोलामरवणचौपई		१८वीं	१९	
२२८	८४२९	ढोलामारवणरीचउपई		१६१३	२५	लि·क.–पं. दयाशेखर ।
२२९	६०५२(२)	,, ,,	कुशललाभ	१८०२	१–५९	लि. स्था.–जावदग्राम महाराणा जगतसिंहजीराज्ये ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
२३०	१०१८६ (२)	ढोलामारवणरी वात		१८५३	१–७३	लि. क.–नंदराम ।
२३१	१०६६०(१)	ढोलामारू, सचित्र			६२	चित्र सं. ६८ ।
२३२	६·५२(५)	ढोलामारूरी वात		१८वीं	१–३७	लि. क.–मित्रराम भट्ट दसोरा ।
२३३	८४२६ (१३)	तपचैत्यवंदन		२०वीं	५३–५४	लि. क –हुकमचंद ।
२३४	१०१८० (७१)	तमाकूँगीत		१९वीं	२२४–२२६	
२३५	१०१८० (१२)	तिथिनक्षत्रविचार		,,	३३–३९	
२३६	८४२२(२९)	तीर्थंकरतवन	साधुविजय	१८वीं	९५–९६	
२३७	८१८३(३)	तीर्थमाला	समयसुन्दर	,,	१५–१९	
२३८	८४२८ (७)	तीर्थावली		२०वीं	६६–६८	
२३९	८४००(२४)	तीरथधमाल	,,	१९वीं	६५–६६	
२४०	८०९७	तेतलीपुत्र मुनीसचरित्र	देवआनंद, ज्ञानचंद्रशिष्य	१८वीं	६	
२४१	१०१८० (६८)	तेतलीपुत्राध्ययन		१९वीं	२१५–२१७	
२४२	१०१८० (६४)	तेरह काठिया		,,	१९९–२००	
२४३	१०२४८(३)	तेरह काठियास्वाध्याय		१८१२	४०–४२	
२४४	८०९०	तेरह ढालसाधुवंदना		१८वीं	८	तेरहवीं ढाल अपूर्ण है ।
२४५	१००५० (८)	तेवीसपदवीरो स्तवन		१९वीं	३६–३८	
२४६	८४२२ (२३)	थंभणपारसनाथतवन		१८वीं	८६–८७	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४७	१०१८० (४८)	थंभणपारसस्तवन		१६वीं	१४१–१४१	अंतमें "देसी बंगालानी" है।
२४८	१०१८० (५५)	द्रव्यादिविचार		,,	१५२–१५७	
२४९	७९३५	द्रौपदीकथा		१७वीं	१६	अपूर्ण।
२५०	८७२२	द्रौपदीचउपई		१६५२	११	*
२५१	७९०३	द्रौपदीचरित्र	कनककीर्ति जिणचंदशिष्य	१८वीं	४१	र. स्था. जैसलमेर।
२५२	८४०३ (३)	दण्डक		२०वीं	५१–६८	
२५३	८४२९(१०)	दरसनचैत्यवंदन		,,	५०–५१	
२५४	९५६५	दशदृष्टान्तविस्तरं	अभयधर्म	१८वीं	५	र. का.–१५७९।
२५५	१००५२ (१६)	दशभवस्तुति		१८९७	१३९–१४१	
२५६	८१७३	दशविध यतिधर्मसज्झाय	सुखसागर कवि	१८०६	१३	
२५७	१०१८० (६६)	दशवैकालिकसूत्र		१६वीं	२०१–२१२	
२५८	१००५० (१४)	दशार्णभद्रराजर्षिचौढालियो		,,	४०–४२	
२५९	८४००(२२)	दादागीत		,,	६३वां	
२६०	८४०० (१०)	दादाजिनकुशलसूरिगीत		,,	३८–३९	
२६१	८४००(१२)	दादाजिनदत्तसूरिगीत		,,	४१–४२	
२६२	८४००(१४)	दादाजीगीत	समयसुन्दर	,,	४२वां	
२६३	९४३० (७)	दादूजीकी वाणी		१८५८	१–२३३	लि. क.— भागोतदास, मारवाड़ मध्ये।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६४	८५६४ (१)	दादूजीको अंग, सचित्र		१९वीं	१–५१	चित्र सं. १३।
२६५	८५०१ (३)	दादूजीको कत		१८वीं	१४९–१९५	
२६६	८५०१ (४)	दादूदयालजीको ग्रंथ		,,	१९५–२३३	अपूर्ण ।
२६७	८४२८ (१७)	दादैजी महाराजरा तवन		२०वीं	१४२–१४५	
२६८	८४२८ (२)	दादैजीरो तवन		,,	१ ला	
२६९	८४०० (२५)	दानगीत	जयंतीदास	१९वीं	६५–६७	
२७०	८४४८ (५)	दानलीला		,,	२४–२८	लि. क. व्यास अमरकीर्ति ।
२७१	९०२७	दान-शील-तप-भावना-संवाद	समयसुन्दर	१६६६	५	
२७२	८१८३ (१)	दानसीलरो चौढालियो	,,	१८वीं	१–७	
२७३	१००५२ (४)	,, ,,		१८९७	१०५–१२५	
२७४	९५०१	दीपमालिका कथा		१८वीं	११	
२७५	१०१८० (५६)	दूहा, पद आदि		१९वीं	१५८–१६२	
२७६	९२५२ (४)	दूहा-सोरठा किसनियारा		१८वीं	३–४	*
२७७	९९४४	दृष्टान्तशतक		१९वीं	४०	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
२७८	१००१२	दृष्टान्तसंग्रह		२०वीं	१८	,, ,,
२७९	९५३६	देवनामावली		१८वीं	७९	अपूर्ण ।
२८०	८०४३	देववंदन		२०वीं	१३	लि. क. दलसुक[ख]राम ।
२८१	८४२९ (१८)	देववादशक्रस्तव		,,	६७–६८	
२८२	८१८३ (४)	देसन्तरीछन्द	समयसुन्दर	१८वीं	१९–२४	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
२८३	८४५५	देसन्तरीछन्द		१९वीं	४७	
२८४	८९४०	दोषावली		१९०३	६	लि क. ऋषि दयाचंद। लि. स्था. खाचरोद।
२८५	९४५९	”		१९४८	४	लि. क. ऋषि प्रेमचंद। लि. स्था. कलकत्ता।
२८६	८८४०	धनदत्तचउपई	समयसुन्दर	१७२४	१४	लि. क. दीप्तिविजय, अमृत-गणिशिष्य।
२८	१०१८० (२४)	धनाऋषिसज्झाय		१९वीं	६३वां	
२८८	१००५२(५)	” ”		१८९७	११५–११७	
२८९	१००५१ (११)	धनाकाकादिरी सज्झाय		१८८५	१३१–१३३	लि. क. लिषमीचंद ऋषि। लि. स्था. मांदपुरी।
२९०	८८४१	धन्नारास	मतिसार	१८वीं	१५	र. का. १७०२।
२९१	१०२४८ (१०)	धन्नारिषरी सज्झाय, सचित्र		१८१२	६६–६७	चित्र सं. १।
२९२	१००५१ (२)	धन्नाशालभद्रमहाचरित्रचौपई		१८८५	६५–१०७	लि. क. लक्ष्मीचंद ऋषि।
२९३	१०१८०(३)	धन्नाशालिभद्रमुनिवरस्वाध्याय		१९वीं	२३–२४	
२९४	९६४१	धन्नासालभद्रचउपई		१७३१	३२	पत्र सं. १, २ अप्राप्त।
२९५	१०१८० (१४)	धमाल		१९वीं	४२वां	
२९६	७९८६	धर्मचर्चा		१८३०	१३	
२९७	९५१२	धर्मदत्तरी चौपाई		१८वीं	५९	प्रथम पत्र अप्राप्त। अपूर्ण।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
२९८	८२६८	धर्मबुद्धिचौपाई	लालचंद	१८०६	१७	
२९९	८३३८	धर्मसारधर्मबुद्धिचौपाई	लाभवर्द्धन, शांतिहर्षगणिशिष्य	१८५९	२५	र. का. १७४२ ।
३००	८५००	ध्रुवचरित्र	जनगोपाल	१९०३	७४	
३०१	८५६१(४)	,,	,,		१२४–१३७	आदिके १४ पत्र अप्राप्त ।
३०२	८१२३	नंदबहोत्तरी		२०वीं	६	र. का. १८७९ । र. स्था. कुचामण ।
३०३	९२५८	नखशिखवर्णन	बलिभद्र	१८६५	१७	लि. क. शोनारायण । लि. स्था. राजगढ सवाई बकतावरसिंहजीराज्ये ।
३०४	९८३६(२)	नरसीजीका माहेरा		१९वीं	५१	
३०५	८८३९	नलदवदन्तीचौपई	समयसुन्दर	१७०४	३४	लि. स्था. उदयपुर ।,
३०६	१०१=० (४५)	नवकारछन्द		१९वीं	१३४–१३५	
३०७	१००५१(३)	नवकारमंत्रतवन		१८८५	१०७–१०८	
३०८	१००५१(५)	,, ,,		,,	१११–११२	
३०९	७९१९	नवकाररास	तिलोकचंद	१८९१	५७	लि. क. तिलोकचंद । र. स्था. उज्जैन ।
३१०	७९४१	,,		१९वीं	७७	र. का. १८५७ ।
३११	७९७४	,,		१७वीं	४	
३१२	८४२८(५)	,,		२०वीं	६१–६४	
३१३	१०२४८(७)	नवकारस्तवन		१८१२	५६–५९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१४	१००५२ (१२)	नवकारस्तवन		१८९७	१३४ वां	
३१५	९४६४	नवतत्त्व		१८वीं	५	
३१६	१००५२(२)	नवतत्त्वगाथाबालावबोध		१८९७	३४–९८	
३१७	९५१९	नवतत्त्वप्रकरण, बालावबोध		१८वीं	१२	लि. क. माणिक्यचंद्र मुनि ।
३१८	८४०३ (१)	नवतत्त्वबालावबोध		२०वीं	१–२१	
३१९	९८३३	,, ,,		१८३९	४६	लि. क. गंगाराम साहजी ।
३२०	८४२८(१५)	नवपद		२०वीं	१३०–१४०	लि. स्था. बोंलीनगर ।
३२१	८४२९(१६)	नवपदआरती		,,	६१–६४	लि. क. हुकमचंद।
३२२	८४०३(६)	नवपदकलशपूजाविधि		,,	८३–९४	
३२३	९८६३	नवपदपूजा		१९२४	१७३	लि. क. पं. सवाईसागर । लि.स्था. देपालनगर मालवदेशे ।
३२४	१०२४९	,,		१९वीं	१५१	लि. स्था. गुंदवचनगर ।
३२५	८१७०	नवबोलकी चर्चा	दीपविजय कवि	,,	१०	
३२६	८०५८	नवरत्नकलश		१८७४	९	
३२७	१०१८० (२०)	नवलनागरी		१९वीं	५९ वां	
३२८	१०२४८ (१३)	नाकोडापार्श्वनाथस्तवन		१८१२	७० वां	
३२९	८५१५	नागराजपिङ्गल		१९२३	२	लि क. रामदास कबीरपंथी ।*
३३०	१०१८० (५१)	नागलानी सिझाय		१९वीं	१४५–१४७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
३३१	८४०६	नासिकेतकथा		१८९८	२२	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
३३२	९४२०(२)	,, ,, सचित्र			१३२–१६५	चित्र सं. १८ ।
३३३	९८४७	न		१८२४	९	लि. क. मालीदेवी ।
३३४	९८२९ (१)	नीतिशतक सटबार्थ	भर्तृहरि	१७९६	१–२५	लि. क. रूपचंद ।
३३५	१०६७५(६)	नीसाणी आदि		१९वीं	१२	
३३६	८५६२(१४)	नीसाणी भागरी		१७९५	१३६–१३९	
३३७	८४२२(३३)	नेमजीतवन	कल्याणसागर	१८वीं	१०५–१०६	
३३८	१००५१	नेमजीरो तवन		१८८५	१४०–१४२	
३३९	१००५१ (१८)	नेमजीरो बारामास्यो		,,	१४२–१४४	
३४०	८४२९(१५)	नेमिजिनगीत		२०वीं	५८–६१	
३४१	८४०० (२१)	नेमिनाथगीत		१९वीं	६२–६३	
३४२	८४००(२६)	,,	अजीतसागर	,,	६७–६९	
३४३	९६२२	नेमिनाथस्तव		१७७९	१०	लि. क. भगवान चेला ।
३४४	१०१८० (५८)	नेमिनाथस्तवन		१९वीं	१७९	
३४५	१००४९	नेमिरास		,,	११०	
३४६	८१३६	नेमीश्वरराजमतीरास		१८४३	९	प्रथम पत्र अप्राप्त । लि. स्था. विक्रमपुर ।
३४७	९९४८	प्रकृतिनो विचार		१८४७	१२	
३४८	८८३५	प्रत्येकबुद्धचौपई	समयसुन्दर	१७००	२६	प्रथम पत्र अप्राप्त । लि. क. विनयराज मुनि शिष्य सकलहर्ष पठनार्थ ।

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४९	९७१९	प्रतापसिंहरी वार्ता		१९वीं	७०	प्रथम दो पत्र अप्राप्त ।
३५०	८३५२	प्रश्नोत्तरबोल		"	१३	लि. क. पुष्कर ऋषि । लि. स्था. वालोतरा ।
३५१	८५६२(११)	प्रहलादचरित्र	जनगोपाल	१७९५	९६–११५	लि. क. गुलाबराय हरिदासोत ।
३५२	९९५९	" "	"	१९वीं	२४	अपूर्ण ।
३५३	८०८९	प्रास्ताविकश्लोकसूत्रार्थ		१८वीं	१०	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
३५४	१०६७८	प्रास्ताविकसज्झाय		१९वीं	५२	जीर्णप्रति, कतिपय पत्र त्रुटित ।
३५५	८३५८	प्रियमेलक चौपाई	समयसुन्दर	१८वीं	७	र. का. १६७२ । र. स्था. मेड़ता ।
३५६	८५१०	प्रेमरत्नाकर	भैयारतनपालके लिये देवीदास कृत	१९२०	१७	लि. क. रामदास कबीरपंथी । *
३५७	१०१८० (६२)	पञ्चकल्याणक		१९वीं	१९१–१९७	
३५८	१०१८० (३८)	पञ्चकारणगर्भित वीरजिनस्तवन		"	९१–९४	
३५९	८४२२(७०)	पञ्चतीर्थीस्तवन	लावण्यसमय मुनि	१८वीं	८३–८४	
३६०	९७०७	पञ्चपरमेष्ठीनमस्कार		१७७१	८	लि. क क्षमाधीर । लि. स्था. सूरतबन्दर ।
३६१	८४२९(१९)	पञ्चरात्र स्तव		२०वीं	६८–६९	
३६२	८५६२(२)	पञ्चसहेलीरा दूहा	छीहल कवि	१७७५	३६–४४	र. का. १५७५ । लि. क. गुलाबराय, हरिदासोत ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
३६३	८१३५	पञ्चसाधूनी चौपदी	कान्हजी [कीर्तिसुन्दर]	१७८६	१०	र. का. १७५६ । र. स्था. जैतारण । लि. क. धर्मसुन्दर ।
३६४	६५६७	पञ्चेन्द्रीकी चउपई		१८८४	२०	लि. क. हर्षचंद । लि. स्था. बरडावदा ।
३६५	८४२८ (१६)	पजूसणांरी थुइ		२०वीं	१४०–१४२	
३६६	८०५५	पट्टीपहाड़ा		१९१४	१४	
३६७	८४२२(१६)	पद्मावतीसज्झाय		,,	८२–८३	
३६८	६०२२	पद्मिनीचरित्र	लब्धोदय	१८३०	३५	
३६९	८४०० (१७)	पद		१९वीं	५२–५६	
३७०	८४२६(२३)	,,		२०वीं	८९–९५	
३७१	९५२२(३)	,,		१७६८	२	
३७२	९५२२(८)	,,		१८वीं	५ वां	
३७३	१०१८० (४९)	,,		१९वीं	१४२–१४३	
३७४	९०५२ (५)	पदमणीचौपई	लब्धोदय गणि	,,	१–७	
३७५	८१८३ (६)	पद्मावती	समयसुन्दर	१८वीं	५७–६०	
३७६	८४२९(२६)	पदसंग्रह		२०वीं	१०७–१०९	
३७७	९२५७ (१)	,,		१९वीं	५२	पत्र संख्या १–१० अप्राप्त ।
३७८	९२५९	,,		१८वीं	१–८१	अपूर्ण ।
३७९	९२८०	पन्दरमी विद्या, सचित्र		,,	६९	चित्र सं. ८५ ।
३८०	८७४८(१)	पनरमी विद्या भोजचरित्रकथा	भवानीदास व्यास	१८४९	१–२६	लि. क. ऋषभकीर्ति । लि. स्था. दौलतगढ़ ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८१	९७९०	परदेशीराजाकी चौपाई	जयमल	१७४७	२१	लि. क. नरोत्तमदास ।
३८२	७९४३	परदेशीसंधि	जेमल ऋषि	१८५१	१४	लि. क. सूर्यसौभाग्य । लि. स्था. नारायणगढ़ ।
३८३	९१५२(४)	परदेशीराजारी चौपाई		१९०५	६०–६९	लि. क. रामधन ।
३८४	१०१८० (६५)	परमारथहिंडोलिना		१९वीं	२०१–२०१	
३८५	१०४२४	पल्लीविचार		२०वीं	४	
३८६	१०६७५	पत्र		१९वीं	६	प्रथम पत्र अप्राप्त । अपूर्ण । पुरुषकी ओरसे स्त्रीके नाम ।
३८७	१००५१ (४)	पांचतीरथीतवन		१८८५	१०९–१११	
३८८	८२६७	पांडवचरितचौपाई	लाभवर्धन	१८५०	४२	लि. स्था. बीकानेर ।
३८९	८८२३	पाबूरा दूहा		१९वीं	५	
३९०	१००५२ (११)	पार्श्वनाथजिनस्तवन		१८९७	१३३ वां	
३९१	१००५२ (१५)	पार्श्वजिनस्तवन		,,	१३८–१३९	
३९२	१०१८० (३३)	,, ,,		१९वीं	८२–८४	
३९३	८४२९(२०)	पार्श्वजिनस्तुति		२०वीं	७०–७१	
३९४	९२५५(१०)	पार्श्वनाथकथा		१८वीं	४२–४८	लि. क. विजयराम ।
३९५	८४०० (११)	पार्श्वनाथगीत		१९वीं	३८–४१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
३९६	८४०० (२८)	पार्श्वनाथ गीत	जिणचंद	१९वीं	७०–७१	
३९७	८४०० (५)	पार्श्वनाथनीशाणी		,,	११–१९	
३९८	१०१८० (६)	पार्श्वनाथनो स्तवन		,,	२७ वां	
३९९	१०१८० (१२)	,, ,,		,,	४०–४१	
४००	१००५२ (२२)	पार्श्वनाथस्तवन		१८९७	१७०–१७९	
४०१	१०१८० (७)	पार्श्वनाथस्तुति		,,	२७ वां	
४०२	८४३१	पार्श्वनाथस्तोत्रादिसंग्रह		,,	२०	
४०३	१००५२ (१३)	पार्श्वप्रभुजीस्तवन		१८९७	१३५–१३६	
४०४	८४२१ (१)	पारसनाथकथा		१९वीं	१८–२०	
४०५	८४२२ (२४)	पारसनाथस्तवन		१८वीं	८७–८८	
४०६	८५६२ (१३)	वीपाजीरी चिंतावणी		१७९५	१३२–१३५	
४०७	८९९४	पुण्डरीककण्डरीक रास	नारायण मुनि	१८वीं	४	
४०८	९८१०	पुण्यछत्तीसी	समयसुन्दर	,,	६	
४०९	१०१८० (२३)	पुद्गलपरावर्तनो विचार		१९वीं	६२–६३	
४१०	९८९९ (६)	पुरुषोत्तमस्तोत्र	गोरार्च	२०वीं	१२ वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
४११	८४०३(७)	पूजापद		२०वीं	९४–९५	
४१२	९२५१	पूरणमासीरी कथा		१८वीं	४१	
४१३	१०१८९(१)	पृथ्वीराजपवाड़ा		१९वीं	१–७०	
४१४	७८७७	पृथ्वीराजरासो	चंद कवि	१८०६	१०८	लि. क. मोटाराम । जीर्ण प्रति ।
५१५	९२०२	,, ,,	कवि चन्द वरदाई	१८९१	११२	
४१६	९२३१	,, ,,	,, ,,	१९०३	७०	
४१७	९२६५	,, ,,	,, ,,	१८५३	५५	
४१८	९३३४	,, ,,	,, ,,	१८१२	४३	
४१९	९३३५	,, ,,	,, ,,	,,	६१३–६२९	लि. क. जयकृष्ण मिश्र ।
४२०	८५६२(१५)	फुटकर दूहा		१७९५	१३९–१४३	दोहा सं. ६२ ।
४२१	९२५२(३)	फूलचिंतावणी		१८वीं	३	
४२२	१०६८० (१)	,, ,,		१९वीं	१–४	
४२३	१०४७६	फूलजी फूलमतीरी वात, सचित्र		,,	५३	चित्र सं. ५३ प्रकीर्ण ।
४२४	९१२७ (१)	फलजी फूलवतीरी वात		,,	१–१४	लि. क. नाथू व्यास ।
४२५	८४९८(३)	फलीबाईकी परची		१८वीं	१६–२४	*
४२६	८४०२(४)	बड़ी नीतिना मांडलां		२०वीं	५६ वां	
४२७	८८३१	वड़ी ब्रह्मचरी	समरसिंघ	१७वीं	५	*
४२८	८४२२(९)	वड़ी नवकार		१८वीं	४२–५०	
४२९	८४२८(१)	वत्तीसदोषसामायक		२०वीं	२	
४३०	१००५२ (७)	ब[ख]न्धक कुमारनो चौढालियो		१८९७	१२३–१३०	
४३१	८४२२ (२५)	वम्भणबाडस्तवन	कमलकलशसूरि	१८वीं	८८–८९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३२	६११७(१)	वल्लभाख्यान		२०वीं	१–२२	
४३३	८५६०(४)	बारहमासी		१८८०	६२–६६	लि. क. सुरतराम चारण
४३४	६२५७	बारहभावना		१८वीं	४–५	
४३५	१०२४८(२)	,, ,,		१६वीं	३६–४०	
४३६	१०१६०	बीकाजीरा तमाशा		,,	१२३	*
४३७	६८६१(१६)	बीजुंमंत्र		२०वीं	८२ वां	
४३८	८५६२(७)	बेदलाका गीत			७५ वां	पत्रके दूसरी ओर केशो पंचोली-का कवित्त है।
४३९	६०५२(६)	भंवरगीतरा दोहरा		१६वीं	१–६	पत्र चिपके हुए और फटे हुए हैं।
४४०	१००५१ (१६)	भंवरारी सज्झाय		१८८५	१३६–१४०	*
४४१	८४६८(१)	भक्तविरदावली		१८वीं	१–४	प्रथम पत्र अप्राप्त *
४४२	८५६१(३)	भगतिभांवती ग्रंथ	अनन्तानंद		१०५–१२३	र. का. १६०६। लि. क. रूपदास। गरीबदास शिष्य।*
४४३	१०१८६(२)	भटवाड़ी		१६वीं	७१–७२	
४४४	८८१८	भड्डलीग्रंथ		,,	८	
४४५	८५०५(४)	भड्डलीगर्भ		१६२७	१–१०	लि. क. रामदास कबीरपंथी।
४४६	८६६५	भडलीवाक्य	भड्डक वि	१८३०	६	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४७	८७४७ (२)	भडलीवायकसमयविचार	भड्डुली	१८६५	२७–३३	अपूर्ण ।
४४८	१०१८० (३७)	भमरगीता		१६वीं	८८–८६	*
४४६	८४६८ (५)	भरथरीउपदेश		१८वीं	२७–३०	
४५०	८५०१ (१)	भरथरीगोरखनाथसंवाद		,,	१–८८	
४५१	१०६७५ (४)	भवानीका स्तोत्र		१८२३	८३–८४	
४५२	८५०३	भागवतभाषानुवाद		१८वीं	६–२४७	ग्यारवें स्कंधके ६वें अध्याय तक प्रति जीर्ण । अपूर्ण ।
४५३	१०६८० (४)	भावकुभावचिंतावणी		१६वीं	२३–२६	
४५४	६५२१	भावनाविचार		१८वीं	३	
४५५	८५६२ (१)	भोगलपुराण		१७६४	१–३६	लि क. अखैराम ।
४५६	८५०५ (१)	भौगुलप्रमांण		१६२३	१–१६	लि. क. रामदास कबीरपंथी ।
४५७	६५२२ (७)	भौंदूज्ञानदूगपद		१७६६	५	लि. क. ऋषि हेमराज । लि. स्था. पट्टनानगर ।
४५८	६०२६	मंगलकलशफाग	कनकसोम	१६वीं	८	
४५६	१००५२ (१६)	मंगलीक		१८६७	१५२–१५३	
४६०	१०१८० (५३)	मंडूकाध्ययन		१६वीं	१४६–१५०	
४६१	१०१८० (६६)	,,		,,	२२०–२२२	
४६२	८४२२ (२६)	मगसी पारसनाथस्तवन		१८वीं	८६–६१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६३	८४२२ (३४)	मगसी पारसनाथस्तवन		१८वीं	१०६–१०८	लि. क. अमरसागर ।
४६४	८९९९	मच्छोदर चौपई	जिनहर्ष	१७०२	१०	पत्र सं. २ अप्राप्त । र. स्था. बाड़मेर ।
४६५	७९४२	मणिपतिचरित्र		१९वीं	३५	अपूर्ण ।
४६६	८८२२	मदनशतक		१८वीं	६	लि. क. पं. ईसर ।
४६७	१०२५८	मधुमालती, सचित्र			६३	चि. सं. ५४ ।
४६८	१०४७७	मधुमालतीकी वात, सचित्र			९	चित्र सं. १०, प्रकीर्ण ।
४६९	९०९२(४)	मधुमालती चौपई	चतुर्भुजदास	१८०२	१–७४	लि. स्था. जावद ।
४७०	८४२२ (२७) ए.	मनगुणतीसी	गुणसागर	१८वीं	९१–९२	
४७१	७९३४	मयणरेहा	मतिशेखर	,,	२१	र. का. १५३७ ।*
४७२	९४६८	महावीरचरित्र, बालावबोध		१६वीं	१७	
४७३	८४२८(१०)	महावीरजीरो पारणो		२०वीं	१०९–११४	
४७४	१००५२ (२०)	महावीरजीरो स्तवन		१८९७	१५३–१५४	
४७५	८४००	महावीरपारणस्तवन	देवीचंद	१८६४	९०–९१	लि. क. अखेराज पुत्र चिरंजी, पौत्र भोजराज ।
४७६	१००५० (१५)	महावीरपारणसिज्झाय		१९वीं	४२–४५	
४७७	८४२२ (१२)	महावीरस्तवन		१८वीं	५७–६३	
४७८	१०२४८ (१८)	,, ,,		१८१३	१३०–१३४	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
४७९	८४०२(१)	महावीरस्तवन सार्थ		१९१९	१–४२	प्रथम पत्र अप्राप्त। र. का. सं. १७३३। र. स्था. ईदलपुर। टीकाकार-नयविजय।
४८०	८४००(३३)	महावीरस्वामीजीरा पारणा	पाशचंद	१९वीं	७५–७८	
४८१	८७९५	माधवानलकामकंदला		१७वीं	१४	
४८२	९०५२(३)	,, ,, चौपई	कुशललाभ	१८०२	१–४१	र. का. सं १६१६। लि. स्था. जावद।
४८३	१०४७९	,, ,, सचित्र			३५	चित्र सं. ३७।
४८४	१०६६० (२)	,, ,, ,,		१८०७	६३–१०१	,, ,,
४८५	९४९५	मानतुंग मानवतीकथा		१८७१	६	लि. क. हमतरम (हिम्मतराम?)
४८६	७८८३	मानतुंग मानवतीचरित्र	मोहनविजय	१८१४	२३	लि. क. चंद्रसौभाग्य। लि. स्था. लघु सादड़ी।
४८७	८८०७	मानतुंगमानवतीचौपई	अभयसोम	१८वीं	१०	र. का. १७२७।
४८८	८१०९	मानतुंगमानवतीरास	अनोपसिंह	१९१५	७	लि. क. रुघमणी। लि. स्था. उदरामसर।
४८९	८३४९	,, ,,	रूपविजय, मानविजयशिष्य	१८०३	४०	लि. क. धर्मसुन्दर, कनकसूरि शिष्य।
४९०	१०१८९(५)	मामा नरसीका माहेरा		१८५०	११४–१४६	
४९१	९७२१(१)	मालदेवजीरो सगुण	राव मालदेवजी	१९वीं	१–४२	
४९२	१०१८० (१०)	मासवारनी पूनिमनो विचार		,,	३०, ३१	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
४९३	१०६८० (५)	मुरखावली		१९वीं	३०, ३१	
४९४	१०२४८ (१६)	मृगापुत्ररिषिसंधि		१८१३	११५–१२६	
४९५	८१२१	मृगालोढ़ानो चरित		१८२९	४	लि. क. फत्ता। लि. स्था. किशनगढ़।
४९६	७९६६	मृगावतीचौपाई	समयसुन्दर	१७वीं	२२	र. का. १६६४। जीर्ण प्रति।
४९७	८८२७	मृगावतीरास	,,	,,	५०	
४९८	७९०९	मेघकुमारचौपाई	गेलराजशिष्य	१८वीं	५१	अपूर्ण।
४९९	१००५१ (१०)	मेणरेहारी चौपई		१८८५	११६–१३१	
५००	१००५४	मेतारिषरी सिज्झाय		१९वीं	९८	प्रथम ६ पत्र अप्राप्त।
५०१	८२८०	मेलक[प्रियमेलक]चौपई	समयसुन्दर	१७वीं	११	र. का. १६७२। र. स्था. मेड़ता।
५०२	८५६२ (४)	मोकमसिंहजी सगतावरो गीत	भीमजी आढा		७१ वां	*
५०३	९०६२(१)	मोरध्वज अष्टपदी		१९६१	१–७	लि. क. मोहनकीर्ति।
५०४	९८६१ (१३)	मौनएकादशीस्तवन		२०वीं	४४–४८	
५०५	८०३७	मौनीएकादशीकथाचौपई	आलमचंद	१८३४	११	लि. क. भगवान।
५०६	१०२४८ (१९)	युगंधरजी गीत		१८१३	१३४–१३६	
५०७	८२८९	योगसारसाहिली वार्ता		१८वीं	५	
५०८	९०००	रतनपालचरित्ररास	मोहनविजय	,,	३९	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
५०९	८१०१	रतनचूड़चउपई	जिनरतनसूरि	१८वीं	२१	र. का. १७२८।
५१०	८२९७	रतनचून्न मणिचून्नचरित्र		१८७१	६१	लि. क. बदीचंद। लि. स्था. क्यामपुर।
५११	८२३३	रतनपालऋषिचरित्र	मोहनविजय	१८९७	७५	लि. क. मोहनविजय। प्रथम पत्र अप्राप्त।
५१२	८२३२	रतनपालमुनिचौपई	रूपवल्लभ, रघुपतिगणिशिष्य	१८२०	१५	लि. क. माणिक्यराज, कर्ताका गुरुभाई। लि. स्था. वीझासर।
५१३	१०६७५(५)	रतनमहेसदासोत रांगडरी वचनिका		१९वीं	८५–९०	
५१४	८७४८(३)	रतनाहमीररी बात		१८८५	१–१९	
५१५	९१२७	,, ,,		१९वीं	१५–३४	लि. क. नाथू व्यास। लि. स्था. जोधपुर।
५१६	८६४१	रसरतनागर	सैदपहार, सैदहमजासुत	१८४०	९५	पत्र सं. ३१ से ४५ अप्राप्त।*
५१७	८५६०(२)	रसालुकंवररी बात		,,	२०–५३	
५१८	८५६०(३)	रसालुकुंवरकी बात		१८८०	५५–६५	
५१९	८८४८	रसिकप्रियाराजस्थानीटीका	केशवदास	१७५४	१–६	लि. क. मुनि प्रेमसुन्दर।
५२०	१०२४८ (१४)	राग, ढाल आदि		१८१३	७१–११२	
५२१	९७२२	रागपद		१९वीं	१–४०	
५२२	९२८९	रागसंकेत		१८वीं	८	
५२३	८८५५	राजनीतिशास्त्र (हितोपदेश)	नारायण	१९००	१३७	लि. क. गणि मोहनविजय। लि. स्था. राघोगढ़, अजितसिंह राज्ये।

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
५२४	६४५०	राजप्रश्नीयसूत्र सटबार्थ		१७६६	१७४	
५२५	६५२२(४)	राजमतीगीत		१८वीं	३	
५२६	६४८०	राजाभोजरास	कुशलधीर	१७२६	५०	र. का. १७२६ । र. स्था. सोझत ।*
५२७	६१६३	राजारिसालूरी बात		१८वीं	१६	लि. क. मानसिंह । लि. स्था. कुचेरा ।
५२८	८५०६	राजियाका सोरठा	कृपाराम बारहट	१६४८	३२	लि. क. सबलसिंह शेखावत । लि. स्था. पलथाणा ।
५२९	१०१८० (११)	राजुलसज्झाय		१९वीं	३१–३२	
५३०	८४००(२०)	राणपुरागीत	समयसुन्दर	,,	६०–६२	र. का. १६७२ ।
५३१	८४२२(३७)	राणपुरारो स्तवन		१८वीं	११४ वां	
५३२	१००५१ (२२)	राणी कमलावतीरी सिज्झाय		१८५५	१५०–१५३	लि. क. लिषमीचंद ऋषि । लि. स्था. माधूपुरी ।
५३३	६१२८	राधाबल्लभका ख्याल		१९वीं	७४	*
५३४	८४९८(२)	रानांबाईकी परची		१८वीं	५–१६	
५३५	७८६८	रामकृष्णचरित्र	लावण्यकीर्ति	१७१९	३८	लि. क. इन्द्रविजय । लि. स्था. शुद्धदंतीपुर ।
५३६	६२८१	रामचरित्र, सचित्र		१८वीं	२४१	चित्र सं. ६३४ ।
५३७	७६००	रामचरित्र	केशराज	१८५१	६८	लि. क. सूर सौभाग्य । लि. स्था. नारायणगढ़, मलागढ़ पार्श्वे ।

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
५३८	८३२९	रामचरित्र (रामयश रसायन)	केशराज	१८७५	११७	लि. क. मोहता आरज्याजी, वक्ता सिहरंग ।
५३९	९२९२	रामचरित्रको कक्को		१८वीं	३	
५४०	९१२६	रामजस	,,	१६८७	१५४	र. का. १६८३ ।
५४१	९२८८	रामरस बोध		१८वीं	६२	
५४२	८५५९ (४)	रामरक्षा स्तोत्र	रामानंद	१८५५	१८९–१९९	
५४३	८८२१	रामरासो	माधोदास	१८४०	२८	
५४४	७९०२	रामविनोद	रामचंद्र, पद्मरंगशिष्य	१८वीं	८४	अपूर्ण ।
५४५	८२४३ (१)	,,		,,	१३८	
५४६	८३५३	,,	,, ,,	१९वीं	१०७	
५४७	८४५१	,,		१८वीं	६१	,,
५४८	८५२८	,,	रामकवि	१९वीं	१५७	पत्र सं. ७७–८३, ८५–११३ और ११५, १२७ तथा १३२ अप्राप्त ।
५४९	९९३९	,,		१८वीं	११३	प्रथम ३ पत्र अप्राप्त ।
५५०	१०२४०	,, भाषा		१८७३	९६	
५५१	८९९६	रामसीता चौपई	समयसुन्दर	१८३५	८४	
५५२	८४९०	रामायण कक्का	टोडरमल	२०वीं	२०	
५५३	७८७४	रावत प्रतापसिंह म्होकमसिंह हरिसिंहोतरी वात	बहादुरसिंह, महाराज, किशनगढ़	१८९५	२७	लि. स्था. जयपुर ।
५५४	१००५१(६)	रिषभदेवजीरो तवन		१८८५	११२ वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
५५५	१००५१ (८)	रिषभदेवजीरो तवन		१८८५	११३–११४	
५५६	८८०१ (१)	रूपचन्द्र चौपाई	वनयकुंवर	१८वीं	५४	र. का. १६३७ । र. स्था. विजयपुर । प्रथम पत्र अप्राप्त ।
५५७	६०८६	रूपदीप पिंगल	जयकृष्णपुष्करणा, भवानीदाससुत	१६५०	१५	
५५८	८१६१	रूपदीप भाषा	जयकृष्ण	१६२६	६	लि. क. रामदास कबीरपंथी । र. का. १७७२ ।*
५५९	८२६०	रूपसेन रास	महानंद	१८५०	८६	लि. क. वधीचंद ।
५६०	६०६२(२)	लावणीसंग्रह		१६६१	८–४७	लि. क. मोहनकीर्ति ।
५६१	१००५६	लीलारास		१६वीं	६८	
५६२	८१७१	लीलावती चउपई	लाभवर्धन	१७४५	४८	र. का. १७२८ । प्रथम पत्र अप्राप्त । कीटविद्ध प्रति ।
५६३	७६६३	लीलावती भाषा	मू. भास्कराचार्य	१६वीं	३४	लि. स्था. बीकानेर । अनूपसिंह राज्ये ।
५६४	८५१४	,, ,,	टीका लालचंद	१६२२	२१	
५६५	६००४	,, ,,	,, ,,	१७८२	२३	लि. क. कानकुशल ।
५६६	८४६५	लीलावती भाषानुवाद	अमीचंद	१८६६	१०५	
५६७	८४६६	,, ,,	,,	१६२५	८८	
५६८	८३२१	लीलावती भासा	लालचंद	१७७४	१७	
५६९	८५०५ (२)	वंशावली उत्पत्ति, भागवतान्तर्गत		१६२३	१–७	लि. क. रामदास कबीरपंथी ।
५७०	८४२२(३६)	वरकाणा पारसनाथतवन		१८वीं	११३ वां	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
५७१	१००५२ (१४)	वर तपस्तवन		१८९७	१३६–१३७	
५७२	८९४१	वस्तुपाल तेजपालरास	समयसुन्दर	१९वीं	२	
५७३	९८२६	वास्तुशास्त्र		१९५३	७	स्फुट पत्र । लि. क. आशुलाल पोकरणा । लि. स्था. नवानगर ।
५७४	८०८८	विंशति पदपूजा	जिनहर्ष सूरि	१८७५	१४	लि. क. हंसराज मुनि ।
५७५	८४२५	विक्रमकथा		१८वीं	२४–१३७	प्रारंभके २३ पत्र अप्राप्त ।
५७६	७९४०	विक्रमचरित (पंचदंड चौपई)		१७९२	२९	लि. क. तिलकसुन्दर ।
५७७	८९८०	विक्रम चौबोली	अभयसोम	१८४५	१७	लि. स्था. जोजावर ।
५७८	८१८३ (८)	विक्रमरास	लाभवर्धन	१८वीं	६५–८०	
५७९	८८०८	विक्रमसेन लीलावती चौपई	मानसागर	१८०१	४२	
५८०	७९२३	विक्रमादित्यसुत विक्रमसेन चौपाई	मानसागर, जीतसागरशिष्य	१८१४	२८	लि. क. चंद्रसौभाग्य । लि. स्था. चीताखेड़ा नगर।
५८१	९४७३	विचार ग्रंथ		१७१७	२२	लि. क. ऋषि कान्हजी धनराज मुनिशिष्य । लि. स्था. बुरहानपुर ।
५८२	९१९७	विचार गाथार्थ		१८१९	७	लि. क. पं. कृष्णविमलगणि । लि. स्था. बीझेवा नगरे ।
५८३	९४५८	विचाररत्नसार. बालबोध		१९१६	१०२	लि. क. व्यास गोरमल । लि. स्था. नागपुर ।
५८४	७९७९	विचारस्तव बालावबोध		१७४२	६	लि. क. कुशललाभ ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८५	९७००	विचारस्तवबालावबोध		१६१४	७	
५८६	८१५०	विद्याविलास		१९वीं	४०	प्रथम और २९वां पत्र अप्राप्त।
५८७	१००२५	विनति पत्रिका, सचित्र				खरड़ा।
५८८	८४२२(३५)	विमलसाहरो सिलोको	विनय[विनीत]विमल (गंभीरसागर शिष्य)	१७७२	१०८–११३	लि. क. अमरसागर।
५८९	९४६१	विमलाचलतीर्थ आरती		१८३१	९	लि. क. व्यास मंगूमल। लि. स्था. बीकानेर।
५९०	९०५२(७)	विवेकविलास	जिनदत्त सूरि	१८३१	१–२१	
५९१	८६५५	विवेकविलास सबालावबोध		१८४९	६२	लि. क. हेमसागर मुनि। लि. स्था. कच्छबंदर।
५९२	१०२४८(८)	विषयत्याग गीत		१८१२	५९–६४	
५९३	९६७४	विषहरण		१८वीं	५	प्रथम पत्र अप्राप्त।
५९४	९२५७(२)	विषापहारस्तोत्र भाषा		,,	१–४	
५९५	८५६९	विज्ञप्ति पत्र, सचित्र		१९वीं		खरड़ा : लेख भाग १४।। फीट, चित्र भाग ६।। फीट। सोजत जैन संघ द्वारा पाटनस्थ विजय जिनेन्द्रसूरिके प्रति।
५९६	८५७०	,, ,,		१८६१		खरड़ा। लेख भाग १०। फीट, चित्र भाग २१ फीट। मेड़ता जैनसंघ द्वारा राधनपुरस्थ विजयजिनेन्द्रसूरिके प्रति।
५९७	८१५७	वीरनिर्वाणस्तवन	देवचंद	१८वीं	५	
५९८	९७२०(११)	वीरमदेरी बात		१९वीं	९१–१४२	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
५९९	१०६४९	वेतालपचीसी		१८००	४८	लि. क. देवनाथ प्रश्नोरा । लि. स्था. सवाई जयनगर ।
६००	९२९६ (३)	वेलीकृष्णरुक्मिणी[री]		११२७	३९–७०	लि. क. नंदूराम ।
६०१	९१५२ (६)	वैद्य मनोत्सव		१९०५	७० वां	
६०२	७९३०	वैदमनोछ्व	नयनसुख (केसवदाससुत)	१८११	१०	र. का. १६४९ । र. स्था. सिंहनंद नगरे। अकबरसाहि राज्ये । लि. क सुजांण ऋषि । लि. स्था. लोटोती ग्राम ।
६०३	८१२२	वैदरभी चौपई	पेमराज	१८वीं	६	लि. स्था. बीकानेर ।
६०४	१००५० (१६)	श्रावकनी करणी		१९वीं	४५–४७	
६०५	१००५३	श्रावकनी करणी, आदि सिझाय संग्रह		,,	९४	
६०६	१००५२ (२१)	श्रावकनो पडिकमणो		१८९७	१६४–१६९	
६०७	८४००(१४)	श्रावकरी करणी		१९वीं	४२–४५	
६०८	८४२८(१८)	,, ,,		२०वीं	१४५–१५३	
६०९	१०२४८(६)	,, ,,		१८१२	५४–५६	
६१०	१००५१(९)	श्रावकरी सज्झाय		१८८५	११४–११६	
६११	१००५२ (१)	श्रावकस्तवन सारिणी		१-९७	१–३३	
६१२	८४००(४)	श्रीअष्टक		१९वीं	१०–११	
६१३	९८५०	श्रीपाल चरित्र भाषा			७०	प्रथम पत्र अप्राप्त । अपूर्ण ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१४	८२३१	श्रीपालप्रबन्ध चतुष्पदी	लालचंद	१९२७	६२	र. का. १८३७। लि. स्था. अजीमगंज।
६१५	१०४७५	श्रीपाल महाराज चरित्र		१८३५	१११	अपूर्ण, स्फुट और त्रुटित पत्र।
६१६	७९२५	श्रीपाल रास		१८२७	४३	र. का. १७३८।
६१७	७९४६	,, ,,		१९वीं	६०	
६१८	८३४२	,, ,,	नयविजय	१८७२	५३	र. का. १७३०
६१९	८८३२	,, ,,	जिनहर्ष	१७८०	१०	
६२०	८९८६	,, ,,	विनयविजय यशोविजय	१९वीं	५७	
६२१	९४४८	,, ,,	महोपाध्याय विनयविजयगणि	१८वीं	७४	लि. क. चतुरसागरगणि।
६२२	९४५३	,, ,,		१७५७	२४	
६२३	८४०० (१६)	श्रीस्तवन		१९वीं	५२–५३	
६२४	८४२२(१६)	,,	गुणसागर	१८वीं	७७–७९	
६२५	९८६१ (६)	,,		२०वीं	२७–३०	
६२६	१००५२ (१०)	,,		१८९७	१३२–१३३	
६२७	८४३०(१४)	शकुनरा दोहा		१८१३	१०२–११५	
६२८	९२९५	शकुनावली आदि		१८०७	१०९	
६२९	८५५८(३)	शनिश्चरदेवजीरो स्तोत्र	कर्पूरविजय	१८४३	१–८	
६३०	१००५० (१०)	शनिसरदेवकी कथा		१९वीं	१–१३	
६३१	८४०१	शनैश्चर कथा		१९२७	४६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
६३२	१००५०(५)	शत्रुञ्जयगिरिवररास		१९वीं	१६–२६	
६३३	८४२८ (११)	शत्रुञ्जयगिरिवरस्तवन		२०वीं	११४–११६	
६३४	८३१९	शत्रुञ्जय रास	समयसुन्दर	१८वीं	१३	लि. क. गंगाराम।
६३५	८४२२(१३)	,, ,,	,,	,,	६३–६८	र. का. १६८२।
६३६	९४६७	शत्रुञ्जयस्तव		१९२२	६	लि. क. कल्याणनिधान मुनि।
६३७	८४२२(२७)	शत्रुञ्जयस्तवन	विमलहर्ष	१८वीं	९३–९४	
६३८	१०१८० (३६)	,, ,,		१९वीं	८७ वां	
६३९	७८७५	शत्रुभेद	मुंहणोत जोगीदास	१८६२	२–२४	*
६४०	९५२२(२)	शान्ति जिनस्तवन		१७८७	१	
६४१	१०१८० (३०)	,, ,,		१९वीं	७४–७५	
६४२	८४००(२३)	शान्तिनाथ गीत	पाशचंद	,,	६३–६५	
६४३	८४२२(२१)	शान्तिनाथस्तवन	गुणसागर, पद्मसागरशिष्य	१८वीं	८४–८५	
६४४	९५२४(२)	,, ,,		,,	४–५	
६४५	९६५९	शालिभद्र चरित्र	जिनराजसूरि	,,	१७	र. का. १६७८। प्रथम पत्र अप्राप्त। लि.स्था. महाजननगर।
६४६	८२५६	शालिभद्र चौपई		,,	१८	
६४७	९१५२ (२)	,, ,,		१९००	४८–५५	
६४८	८४२२(४१)	,, ,,		१८वीं	१२५–१५३	लि. क. गांग ऋषि
६४९	८९०८(३)	,, ,,	,,	१८९८	४४–६९	लि. क. जति रूपचंद पूनम गच्छे। लि. स्था. रतलाम।

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
६५०	६१०१	शालिभद्र चौपई		१६२८	३३	र. का. १६७८। लि. क. प्यारचंद महात्मा
६५१	१०१८० (४७)	शालिभद्र धनाभा[रा]स		१६वीं	१३८–१३६	
६५२	८६६५	शालिभद्र रास	जिनराज सूरि	१७वीं	२१	पत्र संख्या ६–१३ अप्राप्त। लि. क. थिरराज।
६५३	१०१८०(४)	शालिभद्र स्वाध्याय		१६वीं	२४ वां	
६५४	८४२२,२८)	शालिभद्र सज्झाय	सहजसुन्दर	१८वीं	६४–६५	
६५५	८३४३	शालिहोत्र	मू. नकुल	१७६४	१२	लि. क. तुलसीदास वैष्णव। लि. स्था. वेधव।
६५६	६७२४	,,	,,	१८२६	१–५२	लि. क. बखतराम।
६५७	६३३६	शालिहोत्र टीका		१८६२	३६	
६५८	८५६६	शालिहोत्र, सचित्र		१६वीं	६८	चित्र संख्या ४६। जीर्ण और त्रुटित प्रति।
६५६	१०१८० (५०)	शीतलनाथनुं तवन		,,	१४३–१४४	
६६०	१०१८० (१६)	शीतलनाथस्तवन		,,	४५–४६	
६६१	१०१८० (१५)	शीयलसज्झाय		,,	४३–४५	
६६२	६८५४	शीलप्रबन्ध कथा		१८४५	१३	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६३	८३२२	शील रास	विजयदेव सूरि	१७वीं	४	
६६४	८७२१	,,	,, ,,	१८वीं	५	लि. क. मुमुक्षु स्वज्या।
६६५	७९३२	शीलवंती कथा		१६८७	६	लि. क. गगादास जोशी। एक ओर लिखित पत्र हैं।
६६६	१०१८० (६१)	शीलसज्झाय		१९वीं	१८९–१९१	
६६७	८२१४	शुकबहोत्तरी		,,	३०	
६६८	८१०५	शुद्धमति जिनस्तवन	देवचंद्र (?)	१९३०	६	
६६९	१०१८० (४३)	शेत्रुंजा उद्धार		१९वीं	१२६–१३२	
६७०	८४२९(२८)	स्तवन सज्झाय संग्रह		१९३१	१११–२१७	पत्र सं. १६४, १६५ अप्राप्त। लि. क. हुकमीचंद। लि. स्था. मंदसौर।
६७१	८ ९५	स्तवनावली		१७२९	१६	र. स्था. जैसलमेर।
६७२	८४२९(१)	स्तुति पद संग्रह		१९५९	१–१९	लि. क. हुकमीचंद।
६७३	८४२८ (३)	स्नात्रपूजा		२०वीं	१–१८	
६७४	१०६७५ (२)	स्फुट दोहा कवित्त		१९वीं	६	
७७५	८४३० (१५)	स्फुट पद संग्रह		१८१३	११६, ३१७	
६७६	९७३३	स्फुट राग पदावली		१९वीं	५६	
६७७	९५००	स्वामी [जंबू स्वामी] चरित्र		१८०५	१४	लि. क. भोजराज। लि. स्था. बीकानेर। र. का. १५८३। र. स्था. अहिपत्तन।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
६७८	८४००(३०)	संखेसर जिनस्तुतिपद	जिनहर्ष	१९वीं	७२–७३	
६७९	८४०० (२९)	संखेसर पार्श्वनाथस्तवन	जिणचंद	,,	७१–७२	
६८०	९२८२	संतदासजीकी वाणी	संतदासजी आदि	१८वीं	३६८	
६८१	९७९६	संतरद्वार		१७९५	३३	
६८२	९८६०	संवत्सर फल		२०वीं	१४	
६८३	१००५० (१७)	सज्झाय स्त्री पुरुषकी		१८७८	५८–६०	लि. क. गुलाबचंद। लि. स्था. सागर।
६८४	९७६४	सज्झायसंग्रह	रत्नसागर	१९१९	१५	
६८५	९६२६	सतरा प्रकारकी पूजा		१९वीं	९	अपूर्ण।
६८६	८९९३	सत संवत्सरफल		,,	२०	
६८७	८४००(८)	सद्गुरुवर्णनभाषा	मेघराज मुनि	,,	३६–३७	
६८८	८५६५	सदैवच्छ सावलिगारी वात, सचित्र		१८१६	३६	चित्र सं. २६। लि. क. जितेन्द्रसागर।
६८९	९८६१(१५)	सनात्रपूजा		२०वीं	७५–८१	अपूर्ण।
६९०	८४०३(४)	सनात्रपूजा विधि	देवचंद	,,	६८–७६	
६९१	१००५९ (४)	सप्ततिसत जिनस्तोत्र		१७वीं	४१वां	
६९२	९६५३	सम्यकतत्वकौमुदि	जोधराज गोदीका	१८वीं	६०	
६९३	९७१२	सम्यकत्वकौमुदि	रतन चरित्र	१६०६	५०	
६९४	७९०४	समयसार नाटक टीका		१९वीं	१२९	,,
६९५	९६०५	समेतशिखरगिरिपूजा		१९३१	६	लि. क. मंगूमल व्यास। लि -स्था.विक्रमपुर।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
६९६	८२८३	समेतशिखररास टीका	सौभाग्यसुंदर	१९१८	७	र. का. १९०७।
६९७	८४२९(२)	समेतशिखर रासो		२०वीं	१९–३७	
६९८	८४००(४२)	समेतशिखरस्तवन	देवीचन्द	१९वीं	८९–९०	
६९९	८४२२ (५)	सरसतीजीको छंद	मनरंग	,,	२४–२७	
७००	१०१८० (२२)	सवै कतीसा		,,	६१ वां	
७०१	९६७५	सवैया जैनमतका		१८वीं	६	
७०२	८१७२	सत्रहभेदी पूजा		,,	८	
७०३	८१८३(२)	सत्रुञ्जयरो रास	समयसुन्दर	,,	७–१५	
७०४	८५५६	सांचा साहिबकी वीनती		१८५७	३०	लि. क. सोजीराम।
७०५	८४२२(३८)	सांतनाथतवन		१८वीं	११५	
७०६	१००५१ (१४)	सांतनाथजीरो तवन		१८८५	१३६–१३७	
७०७	१००५१	,, ,,		,,	१४४–१४५	
७०८	८८३६	,, ,,	,,	१७वीं	१७	पत्र सं. २ से ५ अप्राप्त।
७०९	८८२९	सांबप्रद्युम्न चौपई	,,	१७०१	१७	लि. स्था. नीमली।
७१०	७९२८	सागरदत्त चौपाई	गुरु झांझण शिष्य (?)	१८वीं	१७	र. का. १७४४। र. स्था. मेदपाट। लि. क. दर्शनसागर। लि. स्था. जालौर।
७११	१०२४८(५)	सातेव्यसनसिज्झाय		१८१२	४९–५४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
७१२	८३१८	साधना गुणसंग्रह	क्षुल्लककुंवर	१७वीं	३	
७१३	८४२६(६)	साधुचैत्यवंदन		२०वीं	४८–५०	
७१४	१००५० (११)	साधुवंदणा		१८७५	१३–१६	लि. क. नेमिचन्द। लि. स्था. बीकानेर।
७१५	८४००(७)	साधुवंदना	पाशचन्द	१९वीं	२१–३५	
७१६	१००५२ (१८)	,,		१८९७	१४२–१५२	लि. क. लक्ष्मीचन्द। लि. स्था. अवंतिका।
७१७	१०२४८(१)	,,		१८१२	५–३५	लि. क. पं. जसवंत. चि. अमरा सहित। लि. स्था. बाड़मेर। प्रथम ४ पत्र अप्राप्त।
७१८	९८१३	सारस्वतविसर्ग संधि		१९५७	१४	लि. क. पं. केशरीसागर। लि, स्था. फलवर्द्धि नगर (फलोधी ?)
७१९	८१८३(५)	सालिभद्र महामुनि चउपई	जिनराज सूरि	१८५४	२४–५७	लि. क. नूसुंदर। लि. स्था. राजलदेसर, सूरतसिंह राज्ये।
७२०	८१८३ (७)	सिंहलसिंह[सुत] चौपई	समयसुन्दर	१८वीं	६०–६४	
७२१	७९६१	सिंहलसुत चौपाई	,,	,,	१०	र. का. १६७२। र. स्था. मेड़ता। लि. स्था. झूठाग्राम।
७२२	८८३३	सिंहलसुत रास		१७वीं	,,	लि. स्था. विक्रमनगर।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रंथनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
७२३	८२१०	सिंहासनबत्तीसी		१९वीं	४२	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
७२४	८०३२	सिंहासनबत्तीसी, सबालावबोध	हर्षसागर शिष्य (?)	१८वीं	२८	एकादश कथा पर्यन्त ।
७२५	८४२९(५)	सिद्धचक्रजीको तवन		२०वीं	४३–४४	
७२६	८४२९(६)	सिद्धचैत्यवंदन		,,	४४–४५	
७२७	८४२८(१२)	सिद्धाचलगिरिस्तवन		,,	१२६–१२८	
७२८	८४००(१८)	सिद्धाचलस्तवन		१९वीं	५६–५८	
७२९	८१५६	सिद्धिचक्र आराधन विधि		,,	९	
७३०	७९१८	सिन्दूरप्रकरण	सोमप्रभ	१८०२	१२०	लि. क. ऋषभदास । लि. स्था. सपाददेश ।
७३१	१००५१ (२०)	सीतारी सिज्झाय		१८८५	१४५–१४६	
७३२	१०१८० (१९)	सीमन्धर जिनस्तुति		१९वीं	४८–५६	लि. स्था. आसंभीया ।
७३३	१००५२(९)	सीमन्धरजीस्तवन		१८९७	१३२ वां	
७३४	१००५२ (१७)	,, ,,		,,	१४१–१४२	
७३५	८४२८(१३)	सीमन्धरस्तवन		२०वीं	१२८–१२९	
७३६	९५२२(६)	लीमन्धरस्वामीजीसुं चैत्यवंदन		१८वीं	४	लि. क. हेमराज ।
७३७	८४२२ (१५)	सीमन्धरस्वामी विनती	देवराज मुनि	,,	७२–७७	
७३८	८४०२(२)	सीमन्धरस्वामीस्तवन	नयविजय	२०वीं	४२–५३	
७३९	१०१८० (१८)	,, ,,		१९वीं	४७–४८	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
७४०	८४२२(२२)	सीमन्धरस्वामीस्तवन	भक्तिलाभ	१८वीं	८५–८६	
७४१	८५६२(३)	सुखसमाधि	खेमदास स्वामी		४५–६६	पत्र संख्या ६१वां अप्राप्त।
७४२	६६५८	सुदर्शनश्रेष्ठिकथा		१६वीं	३४	
७४३	८५६४ (२)	सुन्दरदासजीको कृत		,,	५२–२०४	
७४४	६५८५	सुभद्रासती चौपई	रूपवल्लभगणि	१८२७	१५	
७४५	१०१८० (५४)	सुभद्रासिज्झाय		१६वीं	१५०–१५२	
७४६	६०११	सुभासित दूहा	जिनरंग (?)	१७वीं	१	
७४७	८४३२	सुमतिनाथ गीत		१७२६	२–२३	
७४८	८४०० (३७)	सुमतिनाथस्तवन	पाशचन्द सूरि	१६वीं	८२–८३	
७४६	८८३८	सुरसुन्दरी रास	नयसुन्दर	१६६७	१६	प्रथम पत्र अप्राप्त। लि. क. वच्छराज। लि. स्था. भेलसा।
७५०	८४२२ (३६)	सुक्षत्रसझाय	सहजसुन्दर	१८वीं	११५–११६	लि. क. अमरसागर।
७५१	८६१५	सूर्यनाथ मंगल (वैद्यक)	रूपनाथ जोगीश्वर	१६०८	५५	लि. क. छोटेलाल ब्राह्मण।*
७५२	८४०० (६)	सूरजरो सिलोको		१६वीं	१६–२२	
७५३	८४२८(१४)	सूरप्रभुस्तवन		२०वीं	१२६–१३०	
७५४	१०१८० (२६)	सेतुजीस्तवन		१६वीं	६७–६८	
७५५	८४२८(६)	सेत्रुंजरासि (शत्रुञ्जय रास)		२०वीं	७५–१०६	लि. क. पं. रतनलाल कोटवाल। लि. स्था. महेन्द्रपुर।
७५६	१०१८० (५२)	सेत्रुंजसिद्धस्तवन		१६वीं	१४८ वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
७५७	८४२८ (२१)	सोलेसतीनी वंदना		२०वीं	१–६	लि. स्था मंदसौर।
७५८	८८२८	हंसवच्छ चौपई	जिनोदय	१७१४	२२	लि. क. पं. लिषमीचन्द।
७५९	८६०८ (२)	हंसराज बच्छराज चौपई	जिनोदय सूरि	१८६३	१–४३	लि. क. शिष रूपचन्द गछ (?)
७६०	९०८४	,, ,, ,,	,, ,,	१९३२	४५	लि. क. प्यारचन्द। लि. स्था. पावटा ग्राम।
७६१	१००५१ (१)	,, ,, ,,		१८८५	१–६५	
७६२	८८४४	,, ,, रास	,, ,,	१७९१	२८	
७६३	८८३७	हंसाउली	असायित	१७वीं	२४	
७६४	९४२२	हमीर रासो	महेश कवि	१९वीं	२६	लि. क. नैनसुख नाजर।*
७६५	८५०१ (२)	हरिचंद सत		१८वीं	८८–१४९	
७६६	८५५९ (३)	हरिदासजीके पद		१८५५	९७–१८८	
७६७	८२४०	हीरबलमाछी रास	कुशलसंयम	१७वीं	३५	
७६८	८४४०	हितोपदेश भाषा		१८६३	६८	लि. क. चैनकरण। लि. स्था. रीवां।
७६९	१००५१ (१३)	हीरजीरो तवन		१८८५	१३५–१३६	
७७०	८१५१	त्रयोदश बोल		१८वीं	७	
७७१	१०१८० (२१)	ज्ञानपचवीसी		१९वीं	६० वां	
७७२	१०२४८ (१५)	ज्ञान पञ्चमीतपःस्तवन		१८१३	११२–११५	
७७३	८४२९ (२५)	ज्ञानपञ्चमीविधि		२०वीं	१०२–१०६	
७७४	८४२९ (११)	ज्ञानपद चैत्यवंदन		,,	५१–५२	

* श्री *

परिशिष्ट १

[कतिपय ग्रन्थों का विशेष परिचय]

१८१. ८५६२ (८)* चौहान पृथीराजरो छंद

आदि – सिधि श्रीचुहाण प्रीथीराजरो छंद भुंजंगी लिष्यो। गजनीरै पातसाह बंध कीय्यो जदी करणा कीधी जणी सिम्यारो।

परयो गजनी वंदनमे छ हथं।
वीचारं करै आप करतुत पीथं ।।
हण्यो दास कैहेत कैलास बाणं।
गज पुन च वड बैरी भराणं ।।
वंदै कान काका चपु पट गाढै।
विना दोस पंडीर सै भ्रत काढै ।।
वरजंत चंद चल्यो हुं कनोजं।
जहा सूर सामत कटै घटं फोजं ।।

अन्त – पवारै गिनाऊ कहा लग तोरे।
करू वीनती ईतनी हाथ जोरै ।।
विसासं नवि संभरं विसारो।
अन अपराध अहंकं बीसारो ।।
अबै होय नीदे न देषी तमासो।
ग्रह्यो ग्राह ज्यु गज सांई नीकासो ।।
विना राज आजं करै कोन काजं।
नीभाहो बीरुदं गरीब नवाजं ।।
सदाई कहावो करणानीदानं।
करो आय सहाय कहै चहुआणं ।। १

संपूर्ण लो० पं० गुलाबराय हरीदास्तो [सोत] सं० १७९७ वर्से।

१९१. ८५६२ (९) जनमबत्तीसी

आदि – ।।दं।। सिवस्ती श्रीगणेसाय नमः। अथ जनमबतीसी लीष्यते। कृत पचोली भगतरामजीरी। संवत १७९५ रा भादवा वीद १३ रै दीन ग्रंथ कीय्यो।

दुहा – मथुरा जनमे जगतपत, देवग्रभ अवतार।
सकल वीसव सुषि अत भऐ, सुर नर जै जैकार ।। १

---

*प्रथम संख्या सूचीके क्रमाङ्क और द्वितीय संख्या ग्रन्थाङ्क की सूचक है। कोष्ठक के अङ्क गुटका के अन्तर्गत रचना-संख्या के द्योतक हैं।

चुत्रभुजा धर चुत्रभुज, श्रावध संजुत अनंत।
दोय्यो दरस वसदेवही, देव नमन विहसंत ॥ २

अन्त – जा हरिकी गम वेद नही अरु सेस महेस न पार लय्यो हैं।
जा हरि कारण मुनि तपेसुर, पोजत ही जुग वीत गय्यो है।
ज्यो हरिनैं क्रीपा करकें नंदकें ऊर आन श्रोतार ठय्यो है।
भगतराम भणैं व्रीजमंडलमैं घर हीं घर श्रोछव होय रय्यो हैं ॥ ८

दुहा – घर घर भई वधाईय्या, मंगल गाई नार।
ददकादम षेलै सवैं, श्रोछव भय्यो अपार ॥ १
जनमवतीसी ग्रंथ कर, ऊपज्यो ईधक हुलास।
भगतराम भय त्रांस तज, कर हरचरण नीवास ॥ २

संपुर्णं। सं० १७६५ रा भाद्रवा सुद १ सुनी लीषतु पंचोली गुलाबराय हरीदासोत ॥ श्री ॥

२५०.   ८७२२ द्रौपदी चउपई

श्रादि – ॥र्द०॥ सकल जिणेसर वीर जिण, जगनायक जगिसार।
श्रष्ट कर्म्महे लइ हाथा निहण्या, दोष श्रष श्रट्ठार ॥ १
वांणी योयनगांमिनी, बुद्धि श्रगि विशाल।
ए श्रध्ययन सोलमिइ, भाषि श्ररथ रसाल ॥ २

श्रन्त – एय चरित्र सभलीय, भवीय तप संयम धरिवुं।
चुथा व्रत पालवा काजइं परमादन करवु ॥ ८६
जिम श्रध्ययन सोलमिए, श्रंगि छति जेहुवुं।
चुपई मांहिं मि कहिउं, ए द्रूपदीनिं तेहवुं ॥ ८७
भणायो गुणायो करी ववेक, मि भाषिउ भोलि।
मिछा दुक्कड़ दिउ त्रि सुधि, जो वालिउंड हूलि ॥ ८८

संवत १६५२ वर्षे फागण वदि १४ वुत्रे लखतं.................इति श्री द्रूपदीनी चुपइ संपूर्णं ॥ समाप्तं ॥

२७६.   ८२५२ दूहा सोरठा किसनियारा

श्रादि – श्रथ दुहा सोरठा किसनीयाका
पय तूंडणीं भरेह, दारू ताय श्रावैं दुनी।
कुसंगत कलंक चढेह, कानें रहजे किसनीया ॥ १
हाथी जाए हेक, लप कूकर लारां लवे।
वडपण तणे ववेक, कोई न षीजैं कीसनिया ॥ २

श्रन्त – राम तणे या रीत, लषीयोलो पाए नहीं।
पोते राप परतीत, करसी पोंहतो किसनीया ॥ १८

किम बांधे तरवार, केहना गढ लेवा चढे।
मिलै तौ वैरी मार, काया माहिलौ किसनीया ॥ १६

३२६. ८५१५ नागराज पिंगल

आदि – ॥ श्री गणेशाय नमो ॥ अथ नागराय पिंगलं ॥
ह ज घ न ध र षं भ वन्नैः वरजित अठ अषराणं।
पढ मय ए छंद ग्रहेः सुंणि सुंदर पिंगल पुंण ऐं ॥ १
मगण द्रव दु गुरू तिन्नि, यगण लहु आदि द्रविज्जुहुं।
रगण लहु मप्ति होय सगण गुरु अंत करि जुहुं ॥ २

अन्त–कवित – प्रथम टालि गणदोष, पछ्छै परिहरि दघ अक्षर।
ह ज ध र घ न षं भ होय, ए अठ अक्षर प्रथम न आंणिए अक्षर ॥
जिव आंणि अति जुगतिसुं, डिङझर वेणसगाई।
भाव भक्ति कहो भेद, किसे गुण जास कमाई ॥
विगताई लघु दीर्घ सवे, अमृत रस वांणी कही।
श्री नागन राउ पिंगल कहैं, कवि वीचार बंधो कवित ॥ १६

इति श्री नागराउ प्व्ंगलमतं ॥ लिषिकृतं रामदास कावीरपंथि ॥ संवत् १६२३ अ: द्वितीये ज्येष्ट श्रुदि ६ बुधवारे ॥ सतनांम कबीरकी दया: धनि धर्मदासजीकी दया ॥ रं रं रं।

३५६. ८५१० प्रेमरत्नाकर

आदि – ॥ श्री गणेशये नमो ॥ छप्पय ॥
जय २ गणपति देव देवसेवित सनेह चित।
महादेव नरदेवंदेव सेव करत नित ॥
लहई बुद्धि वर सिधि भोग भवके बहु भजित।
अगम होइ सब सुगन नांम जाको कलि कुंजित ॥
गणराज काज पूरण करण प्रब्रल बुधि वल दीजिये।
रतनेस राम सुषधामजुत ग्रंथ एक जिम कीजिये ॥ १

अन्त – जुग २ कीरति बढायवेकों राजनीकी,
सभामें पढायवेकों आछो गुन गायो है।
प्रेमको सरूप कह्यो भूप रतनेसजीकों,
जीवन जगतरूप सवकुं सुहायो हैं।
सुरजको बंस राजा सागरके सागरेन,
सतजुग मांहि एसो सागर बनायो हैं।
त्यों ही कलिकाल मांझ सोमवंसमैं सपूत,
भैया रतनेसजूके प्रेमरतनाकर वनायो हैं ॥ १८६

सर्ब ग्रंथ संष्या १८६ ॥ इति श्रीभैया रत्नपाल विरचिते प्रेमरत्नाकरे प्रेमस्वरूप

निरूपन नाम पंचमो तरंग ॥ ५ ॥ संवत १९२० पौस सुदि १५ लिपिकृत रांमदास कावीर-पंथी ॥ सतनाम कवीरकी दया संत सहं ॥

४२५. ८४९८ (३) फूलवाईकी परची

आदि – अथ फूलीवाईकी परची लिषंते ॥

चौ० ॥ हूँ मलधारी परणी जुं नांही । पारव्रम पत मेरै माहि ।
सो कहू जनमै मरै जु नांही । सुप सागरउ सदा रहाही ॥ १

सापी। जांनी आया गौरवै, फूली कीयौ विचार।
सव संतारो साहिब्रो, सौ मेरो भरतार ॥२

अन्त – के करीऐ उपाय वोहौ, कहै लीजौ येक रांम।
पूलीका सव ही सरचा, मना मनौरथ कांम ॥ ७०

चौपई ॥ संम रसावृण पूली पीयौ। सतगुर कह्यौ सोई हम कीयौ।
रामजी सौ दूजौ नही कोई। पूली सव जुग देष्यौ जोई ॥ ७१

इति श्री पूलीवाईकी परची संपूर्णः ॥

४२७. ८८३१ वड़ी व्रह्मचरी

आदि – ॥दं०॥ गोयम गणहर पाय प्रणमी करी।
व्रह्मव्रत तवस्यउं हरष हीयइ घरी॥
सूवउ पाली भवसागर तरी।
पामी पामइ पामिस्यइ शिवपरी॥

अन्त – एक कह हुवसइ आघइ कर्म्मग्रच्छि सुधूध करइ।
अनादि अनइ अनंत च उगइ काल अनंतउ संचरइ॥
श्रीपासचंदसूरिंद सीसइ श्रीसमरसिंघ इम उचरइ।
इंद्री तगउ करइ संव रहेला शिवरमणी वरइ॥
इति श्री वड़ी व्रह्मचरीं समाप्त ॥ श्री ॥०

४३६. १०१९० वीकाजी तमासा

आदि – श्री गनेसाई नमै। तमासो वीकाजीको लीपते।
आयो र मेरा चाच वोहोरा, आया रै वोरीका बोरा।
साजी परन्या छो क कवारा।
सा परन्यो तो छो पनी सानी मरी गई।
साजी था को तो फेरू परना द्या।
हा साव रषवदेवजीकी दुहाई,
व्याव करो तो वड़ी वात करो॥

स्याल (तमासा) अपूर्ण लिखित है। आगे "जोगीको तमासो", "कृष्ण-ललिता वचन" आदि लिखित हैं।

४४०. १००५१ (१६) भंवरारी सज्झाय

आदि – श्री गणेसाये नमः ॥
भुलो मन भवरा कांइ भमो।
भम्यो दिवस ने रात, मायारो वांध्यो प्रांणीयो ।
भुलो परम लजाय, भूलो मन भवरा कांई भमे ॥

अन्त – केई चाल्या केई चालसी, केई चालण हार ।
रात दीवस वाटे वहे, परषो नही रे लीगार ॥ भुलो०
मेहमांद कहे वसतु बोरीयो, जे कोइ आवे रे साथ ।
आपणा काज काढवो, लेषो साहिब हात ॥ भुलो०
ईती भवरारी सभाय संपूरणं ॥

४४१. ८४९८ (१) भक्तविरदावली

ग्रंथ का आदि भाग त्रुटित है ।

अन्त – भगतविछल भगवांन, वेद संतन मिल गायो ।
पड़ी भगत म भीड, जहां प्रभु आप ज आयो ॥
सुरति समृथ अरु जग कहै, अघमोचन भगवान ।
यूं दास चरणके सरण पड्यो है, बिडद तुम्हारो जांन ॥१६
इति भगत-ब्रिदावली संपूर्णः

४४२. ८५६१ (३) भगति भांवती ग्रंथ

आदि – रामजी सति है जी । श्री गु[रु] भ्याय नम ॥ ग्रंथ भगति भांवति लिषतं।
सब संतनकुं नाउ माथा । जा प्रसादतै भयो सुनाथा ॥
भो जल पार गयौ को चाहै । तौ संत चरणं रज सीस चढावै ॥१

अन्त – दोहा। नमहूं राम रामांनंद, नमहूं अनंतानंद ।
चंरन कंवल रज सीरि घरे, परप[म] नगैसांनंद ॥२८४

ईति श्री भगति भावेती गंर्थ (ग्रंथ) समापतं। सवत ७१५४ [१७५४ ?] बरषे सावण सुधि एकादसी बार सोमाहवार [सोमवार] लीषतं स्वांमी गरवादासजीका सिष रूपदासजी ॥ जगनाथ प्रठनारथे ॥

४४८. १०१८० (३७) भमर गीता

आदि – समुद्रविजय नृप कुल तिलो [तिलक], मान शिव्यदे नंद ।
वालब्रह्मचारी सदा, नमीह नेमि जिणंद ॥१
तरिथंकर बावीसमो, यादवकुलसिणगार ।
राजमती-मन-वलहो, करुणारस भृंगार ॥२

अन्त – कलस । भेद संयम तणां चित आणे । मांन संवत तणुं एह जांणे ।
वरस बत्रीसनु वरगमूल । भाद्रवें थुण्यां प्रभु सानुकूल ॥२७

इति श्री भमरगीता टोडरवंध नेमजी स्तवनं संपू[र्णं] ॥

४७१. ७६३४ मयणरेहा

आदि – ॥र्द॥श्री सारदाजी [जी] नमः । दूहा । राग धन्यासी ।
जिण चउवीसइ पय नमी, गणहर गोयम पाय ।
करिसु कवित रूलीयामनउं, गुरू सरसुति सुपासाय ॥१

अन्त – जीपी मयणरेहा राषवी । जिणि सासनि महिमा दापवी ।
मयनरेहा सुणि तुं माहा सती । करउं मंगल जयवंती सती ।
पनरह सइं सांत्रीसइं वरिसि । एह प्रवंध कीधुं मनि हरसि ।
वाचीक मतिशेषर इंम कहइं । भणइं गुणेइं ते सर्व सुप लहइ ।

इति शील विषये मयणरेहा महासती प्रवंध समाप्तः ग्रंथा ग्रंथ ५०० । श्री० श्री० श्री० श्री० श्री० श्री० श्री० श्री० ।

५०२ ८५६२ (४) मोकमसिंघ सगतावतरो गीत

माहाराजा मोकमसीघजी सगतावत भींडरराज णारो गीत भीमजी अढया[ढ़ा]रो कह्यो छे।

गीत – जका जणांणी जीहान बीची, जुगां च्यार ताई जातां ।
धणी घाट वीच वाता, घडाणीग्र अग्रेस ।
पुरांणे संम[भ]ली कथा राषरो[ष्यो] अणी प्रांणी,
माहावीर अेकादसी तांणी मोहकमेस ॥ १
वीषमी सतारा जेण, धारी देवां दांणवासु,
भोम काज भारी भारी मांडाणा भारथ ।
फेरवा पडेवां सीघां सा धका नइ कारी,
नीभै ईकतारी धारी सगतारा नाथ ॥२
जांणरा प्रवीण तोतो मंडली मांडांण जाणी,
भाणरो न अंण्यो मनं व्रमा भवेस ।
दसु देस दसु द्रगपाल अेतै,
अेका अग्र पुसालरा तो दीसा आदेस ॥३
सोर जोर तेज ताप, साम कांम सामरै सुमंद्र,
नेकी अेक थारी मोहकमेस थारी नेकी,
च्चार भुजा राषि सदा अेका अेकी,
नेकी वीना अेका अेकी कीसार नीरंद ॥४

गीत अशुद्ध लिखा हुआ है । भींडर उदयपुर के समीप शक्तावतों का एक प्रमुख स्थान है ।

५१६.　　८६४१ रसरतनागर [रसरत्नाकर]

आदि – ॥अथ रसरत्नाकर लिष्यते ॥

दोहा – अलष निरंजन एक है, दूजा जानै कोइ ।
　　वै काहू कीना नई, वह कीना सब कोइ ॥१

चौपई– महमद नबी दीपत उजियारा । जाकै हेत रच्यौ संसारा ।
　　पुनि ता मित्र च्यारि विधि कीये, पंथ चलावनकुं पठये ॥२

अन्त – गंधक मारि धूलि करि लीजै । सो गंधक पारामै दीजै ॥
　　पारो मरकै होवै वा[छा]र । सोवन होत न लगावै वार ॥

अर्थ – गंधक आंमला सारानै एक सो पुट कांजीकी दीजै । तव गंधक मरै । ते गंधक पारो स्म[सम] मात्रा षरलीयै सीशी भर चढावीजै । अग्नि पोहर १२ दीजै । पीतं भवति ॥ पु

५२६　　९४८० राजा भोजरास

आदि – ॥र्द०॥दूहा ॥ श्री संषेसर पासना, पाय कमल पणमेवि ।
　　सदगुरू चरणइ चित धरी, वलि सरसति समरेवि ॥१
　　सानिधकारी वलि सगुरू, प्रणमुं परमानंद ।
　　युग प्रधान जिनदत्त गुरू, श्री जिनकुसल सुरिंद ।

अन्त – श्री षरतरगछि जाणि दिणंद, श्री जिन माणिक्य सुरिंदावे ।[१२]
　　तास सीस वाचक वरदाई, कल्याण धार कहाईवे ॥१३
　　विनेय तास वाचक पद धारीवे, कल्याण लाभ हितकारीवे ।[१४]
　　ते सह गुरुना प्रणमीया, वै कुशलधार उवकायावे ॥१५
　　संवत सतरह सय गुणातीसै, माह वदि तेरस दीसैवे ॥ [१६]
　　पंचम षंड थयौ इहा पूरों, श्री सोजित नगर सनूरीवे ॥ [१७]
　　श्री जिनचंदसूरि गुर राजै, रच्यो रास सुष काजैवे ॥ [१८]
　　शिष्य ध्रमसागर आग्रह करिनै, आ रची वात सुष धरिवैवे ॥ [१९]
　　आगे का अंश त्रुटित है ।

५३३.　　९१२८ राधावल्लभका ष्याल (ष्यालायत)

आदि – श्री राधावल्लभोजयति । अथ ष्यालायत लिष्यते ।

परभातका ष्याल

सुतड़ीनें काहि न छेड़ौ रूड़ा म्हांनै आलसियौ आवै ।
द्रिग हिय म्हारा पगां छुवायौ या नहीं वात सुहात्र ॥ १
हो लाडीजी थांरो औ कांई किसड़ौ सुभाव ।
पिय आधीन रहैं कर जोड्या तोही भौंह चढ़ाव ॥ २

अन्त – मेघ मलार

ग्रैसे मेहमैं पाईये प्यारो न्यारौ कवहुं न कीजीये एक पल ।
गरह लगाये आंकै भरि लैहौ पीत वढईया ॥ ४४

राग टोडी

राजि म्हारौ भरियौ माट उठावौ वेटा रावरा ।
जे उठाऊं गोरड़ी म्हारैं नै घरवासी होय ॥ ४५

पुस्तक के प्रारम्भिक ख्याल प्रतिष्ठान में प्राप्त महाराजा वहादुरसिंह कृत ख्याल ग्रन्थाङ्क १३७५२ से मिलते हैं। विषय, भाषा और शैली की दृष्टि से 'ख्यालायत' के समस्त ख्याल उक्त किशनगढ़ महाराजा बहादुरसिंह कृत ही ज्ञात होते हैं। ग्रन्थाङ्क १३७५२ में सङ्कलित ख्याल भिन्न और लघु रूप में लिखित होते हुए भी संख्या में केवल ८१ हैं और 'ख्यालायत' में प्रत्येक ख्याल पूर्ण रूप में है। "ख्यालायत" के अन्त में "पुष्पिका" नहीं है जिससे कुछ ख्यालों का लेखन में छूट जाना भी संभव है। राजस्थानी भाषा में लिखित गीत-साहित्य की यह उत्कृष्ट कृति अब तक अज्ञात रही है। महाराजा बहादुरसिंह और इनकी रचनाओं के विषय में विशेष ज्ञातव्य मेरे द्वारा सम्पादित एवं प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित "राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग २" में पठनीय है। —सम्पादक

५५८. ८१९१ रूपदीप भाषा

आदि – ॥ श्री गणेशाये नमो ॥ अथ पिंगलौक्त रूपदीप भाषा लिष्यते ।

दोहा ॥ शारदा माता तूं वड़ी, सुवुधि देहु दरिहाल ।
पिंगलकी छाया लिये, वरनें बांवन चाल ॥ १
गुरु गणेशके चरण गहि, हियैं धारिकै विष्नु ।
कुवर भुवानीदासकों, जुगति करै जे कृष्न ॥ २
प्राकृतकी वानी कठिन, भाषा सुगम प्रतक्ष ।
कृपारामकी कृपासुं, कंठ करे शव सिक्ष ॥ ३

अन्त – ॥ सोरठा ॥ द्वज पुहकर न्यात, तिसमैं गोत्त कटारिया ।
सुनि प्राकृतसु वात, तैसै ही भाषा करी ॥ ५४
॥ दुहा ॥ वावन वरनी चाल सव, जैसी मोमैं वुध ।
भूल भेद जाको लहो, करो कवीस्वर सुध ॥ ५५
संवत सत्रैसै वरस, ऊर विहतर पाय ।
भाद्रव सुद दुति गुरु, भयो ग्रंथ सुष पाय ॥ ५३ [५६]

इति श्री रूपदीपक भासा संपूर्ण ॥ लिषित रामदास कवीरपंथी । संवत १९२६ श्रावण वदि ११ वुधवारे ॥ सतनाम कवीरकी दया संत महंतकी दया सुं ॥ १ ॥

६३९. ७८७५ शत्रुभेद

रचना का आदि भाग पत्र सं० १ के अभाव में अप्राप्य है।

अन्त – राजभृत्य होय ते समुझइनैं लीजिये ।
जू मंत्रीजन होय सो अवस्य पहचानिये ॥ ४

दोहा ॥ संवत अठारह सै विते,चौपन मृगसर मास ।
शुक्ल पष्य एकादसी, कीनौ ग्रंथ प्रकास ॥ ५

चौपही ॥ कृष्णदुर्गमैं ग्रंथ वनायो । जैसी मति मेरीमैं आयौ ॥
नृप वहादुरकै विरद कुमार । तिनकै सिघ प्रताप निहार ॥
तिनकै कवर दोय सुषदाई । इक कल्यान अरु केसरभाई ॥
तिनकै मंत्री नीति प्रकास । कियौ ग्रंथ यह जोगीदास ॥

इति श्री सत्रुभेद ग्रंथ मौहनौत जोगीदास कृत संपूर्णम । शुभमस्तु । संवत १८६२ कातिक वदि १२ ।

विशेष—प्रस्तुत रचना किशनगढ़ नरेश महाराजा वहादुरसिंह के पौत्र कल्याणसिंह और केसरसिंह के मंत्री जोगीदास मोहनौत कृत है और रचनाकाल के ८ वर्ष पश्चात् लिखित होने से महत्त्वपूर्ण है ।

७५१. ८६१५. सूर्यनाथमंगल, वैद्यक ग्रंथ

आदि – ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सूर्यनाथमंगल वैद्यक ग्रंथमेंथि[थी] चिकित्सा लिष्यते ।

पहीले लछिन शाध्यके कहूं, ज शास्त्र विचार ।
फिर अशाध्यके दोहरे, अब कहिये नीरभार ॥ १

अन्त – निंव त्वचा पीपलि वासी पांणीसूं नेत्राजन जल प्रवा[ह] होय
सम १ निलो थथो षांड निवुंका रससूं लावै वीमची द्राद जाय ।

इति श्री दीपनाथ सिष्य रूपनाथ जोगीस्वर निर्वाण विरचितायां रूपनाथ मंगल समाप्त । संवत् १६०८ भादवा वुदि ७ सोमवासरे लिखितं ब्राह्मण छोटेलाल पठनार्थं पंडत भगवानदासजा ।

७६४. ६४२२ हमीर रासो

आदि – ॥ श्री गणेशाय नम[:] । श्री सरस्वतीन्म[नमः] । श्री गुरभ्यो
नम [श्री गुरुभ्योनमः] अथ हम्मीररासो लिक्षते [लिष्यते] ॥

दोहा ॥ श्री गनेस गुरू सरस्वती, बुधि बानीके दांनि ।
कवि महेस स बरनन करत, हठ हमीरको जांनि ॥ १
पहिलै साहि सुमरियै, सबको सिरजनहार ।
आदि भवानी अंव्विका[अम्बिका], श[शा]रदै सुरति सम्हार ॥

अन्त – ।। छंद ।। मिलै राव पतिसाहि, छीर ज्यौं नीर वहाये ।
जो पारसकौं मिलत लोहो, कंचन हो आये ।।
अलादीन हमीर से हूये न अब कोई होय ।
कवि महेस ईम उचर[रै] वे वसे सुरग सब कोय ।। ३९५

।। दोहा ।। कवि महेस वननै [वर्णन]कीयो, रासो राव हमीर ।
भूल चूक ज्यौं होय तो, मांफ करो तकसीर ।। ३९६

ईती श्री राव हमीरको रासो संपूर्ण । लीखीत नाजर न[नै]णसुष न बांच वच्यार सुंज्यां रांम रांम रांम रांम बंचजो जी ।।

परिशिष्ट २

ग्रन्थकार नामानुक्रमणिका

—००:०:००—

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

++++++++++

प्रकाशित ग्रन्थ

१. संस्कृत

१. प्रमाणमंजरी, तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्यकृत, सम्पादक – मीमांसान्यायकेसरी पं० पट्टाभिरामशास्त्री, विद्यासागर। मूल्य—६.००

२. यन्त्रराजरचना, महाराजा सवाईजयसिंह-कारित। सम्पादक—स्व० पं० केदारनाथ ज्योतिर्विद्, जयपुर। मूल्य—१.७५

३. महर्षिकुलवैभवम्, स्व० पं० मधुसूदन ओझाप्रणीत, सम्पादक—म० म० पं० गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी। मूल्य—१०.७५

४. तर्कसंग्रह, अन्नंभट्टकृत, सम्पादक—डॉ. जितेन्द्र जेटली, एम.ए., पी-एच. डी., मूल्य—३.००

५. कारकसंबंधोद्योत, पं० रभसनन्दीकृत, सम्पादक—डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी.। मूल्य—१.७५

६. वृत्तिदीपिका, मौनिकृष्णभट्टकृत, सम्पादक—स्व.पं. पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य। मूल्य—२.००

७. शब्दरत्नप्रदीप, अज्ञातकर्तृक, सम्पादक—डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी.। मूल्य—२.००

८. कृष्णगीति, कवि सोमनाथविरचित, सम्पादिका—डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य—१.७५

९. नृत्तसंग्रह, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका—डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य—१.७५.

१०. शृङ्गारहारावली, श्रीहर्षकविरचित, सम्पादिका—डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., लिट्। मूल्य—२.७५

११. राजविनोद महाकाव्य, महाकवि उदयराजप्रणीत, सम्पादक—पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उपसञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य—२.२५

१२. चक्रपाणिविजय महाकाव्य, भट्टलक्ष्मीधरविरचित, सम्पादक—केशवराम काशीराम शास्त्री मूल्य—३.५०

१३. नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग), महाराणा कुम्भकर्णकृत, सम्पादक—प्रो. रसिकलाल छोटालाल पारिख तथा डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य—३.७५

१४. उक्तिरत्नाकर, साधुसुन्दरगणिविरचित, सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य श्रीजिनविजयमुनि, सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य—४.७५

१५. दुर्गापुष्पाञ्जलि, म०म० पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पादक—पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य। मूल्य—४.२५

१६ कर्णकुतूहल, महाकवि भोलानाथविरचित, सम्पादक—पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उप-संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। इन्हीं कविवर की अपर कृति श्रीकृष्णलीलामृतसहित। मूल्य—१.५०

१७. ईश्वरविलासमहाकाव्यम्, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक—भट्ट श्रीमथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर। मूल्य—११.५

१८. **रसदीर्घिका**, कविविद्यारामप्रणीत, सम्पादक–पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, उपसंचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–२.००

१९. **पद्यमुक्तावली**, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक–भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य। मूल्य–४.००

२०. **काव्यप्रकाशसंकेत**, भाग १ भट्टसोमेश्वरकृत, सम्पादक–श्रीरसिकलाल छो० पारीख, मूल्य–१२.००

२१. ,, भाग २ ,, ,, मूल्य–८.२५

२२. **वस्तुरत्नकोष** अज्ञातकर्तृक, सम्पादक–डॉ० प्रियबाला शाह। मूल्य–४.००

२३. **दशकण्ठवधम्**, पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पादक–पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी। मूल्य–४.००

२४. **श्री भुवनेश्वरीमहास्तोत्रम्**, सभाष्य, पृथ्वीधराचार्यविरचित, कवि पद्मनाभकृत, भाष्यसहित पूजापञ्चाङ्गादिसंवलित। सम्पादक–पं. श्रीगोपालनारायण बहुरा। मूल्य–३.७५

राजस्थानी और हिन्दी

२५. **कान्हडदेप्रबन्ध**, महाकवि पद्मनाभविरचित, सम्पादक–प्रो० के.बी. व्यास, एम. ए.,। मूल्य–१२.२५

२६. **क्यामखां-रासा**, कविवर जान-रचित, सम्पादक–डॉ. दशरथ शर्मा और श्रीअगरचन्द नाहटा। मूल्य–४.-७५

२७. **लावा-रासा**, चारण कविया गोपालदानविरचित, सम्पादक–श्रीमहताबचन्दखारैड़। मूल्य–३.७५

२८. **वांकीदासरी ख्यात**, कविवर वांकीदासरचित, सम्पादक–श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम. ए.। मूल्य–५.५०

२९. **राजस्थानी साहित्यसंग्रह**, भाग १, सम्पादक–श्रीनरोत्तम स्वामी, एम.ए.। मूल्य–२.२५

३०. **राजस्थानी साहित्यसंग्रह**, भाग २, सम्पादक–श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम. ए., साहित्यरत्न। मूल्य–२.५०

३१. **कवीन्द्र कल्पलता**, कवीन्द्राचार्य सरस्वतीविरचित, सम्पादिका–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मूल्य–२.००

३२. **जुगलविलास**, महाराज पृथ्वीसिंहकृत, सम्पादिका–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मूल्य–१.७५

३३. **भगतमाळ**, ब्रह्मदासजी चारणकृत, सम्पादक–श्री उदैराजजी उज्ज्वल। मूल्य–१.७५

३४. **राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूची**, भाग १। मूल्य–७.५०

३५. **राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची**, भाग २। मूल्य–१२.००

३६. **मुंहता नैणसीरी ख्यात**, भाग १, मुंहता नैणसीकृत. सम्पादक–श्रीबद्रीप्रसाद साकरिया। मूल्य–८.५०

३७. **रघुवरजसप्रकास**, किसनाजीआढाकृत, सम्पादक–श्री सीताराम लाळस। मूल्य–८.२५

३८. **राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची**, भाग २, सम्पादक–मुनि श्रीजिनविजय। मूल्य–४.५०

३९. **राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची**, भाग २—सम्पादक–श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम.ए., साहित्यरत्न मूल्य–२.७५

४०. **वीरवाण**, ढाढ़ी बादरकृत, सम्पादिका–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मूल्य–४.५०

४१. **स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण ग्रन्थ संग्रह सूची**, सम्पादक–श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए. और श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी दीक्षित। मूल्य–६.२५

४२. **सूरजप्रकास**, भाग १–कविया करणीदानजी कृत, सम्पादक–श्री सीताराम लाळस। मूल्य–८.००

४३. **नेहतरंग**, रावराजा बुधसिंह कृत—सम्पादक–श्री रामप्रसाद दाधीच एम.ए.. मूल्य–४.००

प्रेसों में छप रहे ग्रंथ

संस्कृत

१. शकुनप्रदीप, लावण्यशर्मरचित, सम्पादक–मुनि श्रीजिनविजय ।
२. त्रिपुराभारतीलघुस्तव, धर्माचार्यप्रणीत, सम्पादक–मुनि श्रीजिनविजय
३. करुणामृतप्रपा, भट्ट सोमेश्वरविनिर्मित, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
४. बालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर संग्रामसिंहरचित, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
५. पदार्थरत्नमंजूषा, पं० कृष्णमिश्रविरचित, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
६. वसन्तविलास फागु, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०–श्री एम. सी. मोदी ।
७. नन्दोपाख्यान, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०–श्री बी.जे. सांडेसरा ।
८. चान्द्रव्याकरण, आचार्य चन्द्रगोमिविरचित, सम्पा०–श्री बी. डी. दोशी ।
९. वृत्तजातिसमुच्चय, कविविरहाङ्करचित, सम्पा०–श्री एच. डी. वेलणकर ।
१०. कविदर्पण, अज्ञातकर्तृक ,, ,, ,,
११. स्वयंभूछन्द, कविस्वयंभूरचित ,, ,, ,,
१२. प्राकृतानन्द, रघुनाथकविरचित, सम्पा०–मुनि श्री जिनविजय ।
१३. कविकौस्तुभ, पं० रघुनाथरचित, ,, श्री एम. एन. गोरी ।
१४. एकाक्षर नाममाला—सम्पादक–मुनि श्री रमणीकविजयजी ।
१५. नृत्यरत्नकोश, भाग २, महाराणा कुंभकर्णप्रणीत, सम्पा०–डॉ. प्रियबाला शाह ।
१६. इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध, सम्पा०–डॉ. श्रीदशरथ शर्मा ।
१७. हमीरमहाकाव्यम्, नयचन्द्रसूरिकृत, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजयजी ।
१८. रत्नपरीक्षादि, ठक्कुर फेरूरचित ,, ,,
१९. स्थूलिभद्रकाकादि, सम्पा०–डॉ० आत्माराम जाजोदिया ।
२०. वासवदत्ता, सुबन्धुकृत, सम्पा०–डॉ० जयदेव मोहनलाल शुक्ल ।
२१. घटखर्परादि पंचलघुकाव्यानि ,, पं० अमृतलाल मोहनलाल ।
२२. भुवनदीपक, यावनाचार्यकृत, सम्पा०–पं० श्रीपुरुषोत्तमभट्ट ।
२३. वृत्तमुक्तावली, श्रीकृष्ण भट्ट गुम्फित, सम्पा० पं० श्री मथुरानाथ भट्ट

राजस्थानी और हिन्दी

२४. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग २, मुंहता नैणसीकृत, सम्पा०–श्रीबद्रीप्रसाद साकरिया ।
२५. गोरा बादल पदमिणी चऊपई, कवि हेमरतनकृत ,, श्रीउदयसिंह भटनागर ।
२६. राजस्थानमें संस्कृत साहित्यकी खोज, एस. आर. भाण्डारकर, हिन्दीअनुवादक–श्रीब्रह्मदत्त त्रिवेदी ।
२७. राठौडांरी वंशावली, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
२८. सचित्र राजस्थानी भाषासाहित्यग्रन्थसूची, सम्पादक–मुनिश्रीजिनविजय ।
२९. मीरां-बृहत्-पदावली, स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण द्वारा संकलित, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
३०. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग ३, संपादक–श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी ।
३१. सूरजप्रकास, भाग २, कविया करणीदानकृत, सम्पा०–श्रीसीताराम लाळस ।
३२. मत्स्य प्रदेश की हिन्दी-साहित्य को देन—डॉ० मोतीलाल गुप्त ।
३३. रुक्मिणी-हरण, सांयांजी झूला कृत, सम्पा० श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया ।

विशेष– पुस्तक-विक्रेताओं को २५% कमीशन दिया जाता है ।